Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ

(सूरत ईनाम : 64)

अनुवाद : पूछ कि कौन है जो तुम्हें पृथ्वी और समुद्र के अंधेरों से निजात देता है जब तुम उसे रौ कर पुकार रहे होते होऔर गुप्त रूप में भी कि अगर उसने हमें इस (आफ़त) से निजात दे दी तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ारों में से हो जाऐंगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 25

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

22 जुल्कादा 1443 हिज्री कमरी, 23 अहसान 1401 हिज्री शम्सी, 23 जून 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम व्यापार में पूरी दियानत से काम लेते थे

(2059) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि आदमी इसकी परवाह नहीं करेगा कि उसकी कमाई हलाल से है या हराम से।

(तशरीह) इस हदीस की तशरीह में हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : مَنْ لَّمْ يُبَالِ مِنْ حَيْثُ كَسَبَ الْمَالَ : उस व्यक्ति की तिजारत बाबरकत नहीं होती जो अपने कारोबार में हलाल और हराम की परवाह नहीं करता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस ज़माना में ऊपर वर्णित भविष्यवाणी फ़रमाई कि एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि इस वक़्त हलाल और हराम की परवाह नहीं की जाएगी, सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम तिजारती कारोबार में पूरी दियानत और अमानत से काम लेते थे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी तर्बीयत का परिणाम था।

(सही बुख़ारी,भाग 4 किताबुल बियू, मुद्रित 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

सुनो ! क़ुरआन शरीफ़ ने क्या कहा है إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ

अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दुआएं कबूल करता है, जो लोग मुत्तक़ी नहीं हैं, उनकी दुआएं क़बूलियत के लिबास से नंगी हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मैं ने बहुत लोगों को कहते सुना है कि हमने बहुत दुआएं कीं और उनका नतीजा कुछ नहीं हुआ। और इस नतीजा ने इन को दहरिया बना दिया। बात असल में यह है कि प्रत्येक अमर के लिए कुछ क़वायद और क़वानीन होते हैं। ऐसा ही दुआ के वास्ते क़वायद-ओ-क़वानीन निर्धारति हैं। ये लोग जो कहते हैं कि हमारी दुआ क़बूल नहीं हुई, उसका कारण यही है कि वे इन क़वायद और मुरातिब का लिहाज़ नहीं रखते जो क़बूलियत दुआ के वास्ते ज़रूरी हैं।

अल्लाह तआला ने जब एक असीमित और बेश बहा ख़ज़ाना हमारे सामने पेश किया है और हम में से प्रत्येक एक उसको पा सकता है और ले सकता है। क्योंकि यह कभी भी जायज़ नहीं कि हम अल्लाह तआला को क़ादिर ख़ुदा मान कर यह तजवीज़ करें कि जो कुछ उसने हमारे सामने रखा है और जो हमें दिखाया है, यह केवल मृगतृष्णा और धोखा है। ऐसा वहम भी इन्सान को हलाक कर सकता है। नहीं, बल्कि प्रत्येक एक उस ख़ज़ाना को ले सकता है और अल्लाह तआला के यहां कोई कमी नहीं। वह प्रत्येक एक को यह खज़ाने दे सकता है फिर भी इस में कमी नहीं आ सकती।

उद्देश्य वह तो हमको नबुव्वत के कमालात तक देने को तैयार है लेकिन हम उसके लेने की भी सई करें। अतः याद रखो कि यह शैतानी वस्वसा और धोखा है जो इस पैराए में दिया जाता है कि दुआ क़बूल नहीं हुई। असल यही है कि वह दुआ क़बूलियत के आदाब और अस्बाब से ख़ाली महिज़ है। फिर आसमान के दरवाज़े उसके लिए नहीं खुलते। सुनो! क़ुरआन शरीफ़ ने क्या कहा है। إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (अल् मायद : 28) अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दुआएं कबूल करता है। जो लोग मुत्तक़ी नहीं हैं, उनकी दुआएं क़बूलियत के लिबास से नंगी हैं। हाँ अल्लाह तआला की रबूबियत और रहमानियत उन लोगों की परवरिश में अपना काम कर रही है। (मल्-फ़ूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 377 मुद्रित 2018 क़ादियान) ★ ★ ★

चून्टीयों में बहुत बड़ा भारी निज़ाम होता है,

इसी तरह शहद की मक्खियां का भी बड़ा महान निज़ाम है, ख़ुदा तआला ने शहद की मक्खियों के वर्णन को इसलिए चुना है कि यह मालूम हो कि एक बाला हस्ती है जिसने उसे यह इलम दिया है और उसको ऐसा निज़ाम दिया है जो ख़ुद उसका सोचा हुआ नहीं है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 69 وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

जानवरों की तहक़ीक़ात में से शहद की मक्खी और चियूंटी की तहक़ीक़ात बहुत वसीअ हुई है। इस तहक़ीक़ात ने यह साबित किया है कि चून्टीयों में बहुत बड़ा भारी निज़ाम होता है। यह हाथों से बात करती है। इन्सान की तरह अपनी लाश की हिफ़ाज़त करती है। आहार का ढेर रखती है। सर्दी और गर्मी के मकानात अलैहदा अलैहदा रखती है। चौबारे बनाती है। एक किस्म का कीड़ा है जिसमें से एक माद्दा निकलता है जो चियूंटी के लिए दूध का काम देता है इन कीड़ों को यह जमा कर के अपने घरों में रखती हैं और उनकी ग़िज़ा का ख़्याल रखती हैं और जब आहार में कमी हो तो तजुर्बा से मालूम हुआ है कि वह इन कीड़ों को पहले ग़िज़ा देती हैं। फिर बच रहे तो ख़ुद खाती हैं। उनमें लड़ाईयां भी होती हैं। सुलह भी होती है। ग़रज़ एक वसीअ निज़ाम उन में पाया जाता है ये सब एक किस्म की गुप्त वह्यी के नतीजा में है।

इसी तरह नहल का भी बड़ा अज़ीमुश्शान निज़ाम है। कुछ माहिरों का ख़्याल है कि इन्सानों के निज़ाम से उनका निज़ाम बेहतर होता है। उनका एहसास कुछ बातों में इन्सान से ज़्यादा होता है। उनके प्रत्येक छत्ते में एक मलिका होती है। सब मक्खियां उसकी पैरवी करती हैं। उनकी नसलें अलैहदा अलैहदा होती हैं। इन्सानों की तरह सब मिलकर नहीं रहतीं। जब नई मलिका पैदा होती है तो पुरानी मक्खियां उसको मारना चाहती हैं तो सारी नई जवान मक्खियां इस पर पहरा देती हैं और मिलकर उसकी हिफ़ाज़त करती हैं वह मलिका बड़ी हो कर अपने साथियों समेत अलैहदा छत्ता बनाती है। फिर मलिका लड़ाई करके या तो पहली बड़ी मक्खियों को पहले छत्ते से निकाल देती है या शिकस्त खाकर दूसरी जगह चली जाती है। उनके निज़ाम की और भी तफ़सीलात हैं जो हैरत-अंगेज़ हैं। ख़ुदा तआला ने नहल के वर्णन को इसलिए चुना है कि यह मालूम हो कि एक बाला हस्ती है जिसने उसे यह इलम दिया है और इस को ऐसा निज़ाम दिया है जो ख़ुद उस का सोचा हुआ नहीं है। तथा इस मिसाल को इस लिए चुना है कि शहद की मक्खी का निज़ाम मामूली ग़ौर से नज़र आ जाता है और इस लिए भी कि इससे एक ऐसी ग़िज़ा पैदा होती है जिसे इन्सान ने बेहतरीन समझा है। इस निज़ाम का इस में पाया जाना यह बताता है कि इस में अक़ल है। परन्तु उस का एक ही हालत में रहना और तरक़्क़ी न कर सकना यह बताता है कि वह निज़ाम उसको

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुहम्मद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब से मुसैलमा कज़्ज़ाब के नाम

इसके बाद,निसंदेह ज़मीन अल्लाह ही की है वह अपने बंदों में से जिसे चाहेगा उसका वारिस बना देगा और आक़िबत मुत्तक़ियों की ही हुआ करती है और उस पर सलामती हो जो हिदायत का अनुसरण करे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ होने वाले यमाम के युद्ध के कारण और हालात-और-वाक़िया

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 मई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में जंग-ए-यमामा का वर्णन हो रहा था। जंग-ए-यमामा की तफ़सील में लिखा है कि यमामा यमन का एक मशहूर शहर है। आजकल यह इलाक़ा सऊदी अरब में स्थित है।

(फ़र्हंग सीरत अज़ सय्यद फज़लुल रहमान, पृष्ठ 321ज़व्वार अकैडमी पब्लीकेशनज़ कराची 2003 ई.) (उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामिया, भाग 23 पृष्ठ 311 ज़ेर-ए-एहतिमाम दानिश गाह पंजाब लाहौर 2002 ई.)

यमामा एक इंतिहाई सरसब्ज़ और ज़रख़ेज़ इलाक़ा था। इसलिए यमामा के बारे में लिखा है कि यमामा ख़ूबसूरत तरीन शहरों में से एक शहर था और इस में माल, दरख़्त और खजूरें बकसरत थीं।

(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 506 ज़ेर शब्द यमामा, दारुल कुतुबु इल्मिया बेरूत)

यमामा में बनू हनीफा आबाद थे जो सख़्त जंगजू क़ौम थी। उनके बारे में तफ़सीर क़ुर्तुबी में आयत سَتُدْعَوْنَ اِلٰی قَوْمٍ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ یُسْلِمُوْنَ (अल् फ़तह : 17) कि तुम अनक़रीब एक ऐसी क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे जो सख़्त जंगजू होगी। तुम उनसे क़िताल करोगे या वे मुस्लमान हो जाएंगे, की तफ़सीर में लिखा है कि हसन कहते हैं कि सख़्त जंगजू क़ौम से मुराद फ़ारस और रुम हैं। इब्ने जुबैर कहते हैं कि इस से मुराद हवाज़िन और सक़ीफ़ के क़बायल हैं। ज़ोहरी और मुक़अतिल कहते हैं कि इस से मुराद बनू हनीफा हैं जो यमामा में रहने वाले हैं और मुसैलमा के साथी थे। राफ़े बिन ख़दीज कहते हैं कि हम यह आयत पढ़ते थे लेकिन हमें यह मालूम नहीं था कि यह जंगजू क़ौम कौन है। यहां तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें बनू हनीफा से क़िताल के लिए बुलाया तो हमें पता चला कि उनसे मुराद यह क़ौम है।

(अल् जामे अल् हुक्काम अल्-क़ुरआन अज़ अल्लामा कुर्तुबी पृष्ठ 2850-2851 ज़ेर आयत सूरत आयत 16 मुद्रित दार इब्ने हज़्म)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 7 हिज्री के आरम्भ में में या कुछ के नज़दीक 6 हिज्री में मुख़्तलिफ़ देशों के बादशाहों को तब्लीग़ी पत्र लिखे तो एक पत्र यमामा के बादशाह होज़ाह बिन अली और यमामा वालों के नाम भी लिखा जिसमें उसे और यमामा वालों को इस्लाम की तरफ़ दावत दी। जब 9 हिज्री में मुख़्तलिफ़ वफ़ूद मदीना आए तो यमामा से बनू हनीफा का वफ़्द भी आया। इस वफ़्द में मुज्जाह बिन मुर्रह भी थे जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जागीर में एक ग़ैर-आबाद ज़मीन अता फ़रमाई थी जिसकी उसने दरख़्वास्त की थी। इस वफ़्द में रज्जाल बिन उन्फ़ुवाह भी था इस के इलावा मुसैलमा कज़्ज़ाब, सुमामा बिन कबीर बिन हबीब भी था। इब्ने हशाम के नज़दीक उसका नाम मुसैलमा बिन सुमामा था और इस की कुनिय्यत अबू सुमामा थी। बनू हनीफा का यह वफ़्द मदीना में अंसार की एक औरत रमला बिंत हारिसा के घर ठहरा।

(उद्धरित فتوح البلدان لامام ابی الحسن احمد بن یحییٰ البلاذری पृष्ठ 59 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.) (उद्धरित सीरतुन नबविय्या ले इब्ने हिशाम, पृष्ठ 852 क़दुम वफ़्द बनू हनीफा, दारुल कुतुबु इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत करने के लिए नयमित वफ़ूद आए तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में एक घर निर्धारित कर लिया था जहां वफ़ूद ठहरते थे। यह घर रमला बिंत हारिस का था जो बनू नज्जार की एक महिला थीं। यह एक बहुत बड़ा मकान था।

(अल् मुफ़स्सल फ़ी तारीख़ अरब क़बल अज़ इस्लाम अज़ जव्वाद अली, भाग 5 पृष्ठ 258 मकतबा जरीर 2006 ई.)

जब बनू हनीफा के ये लोग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात के लिए गए तो मुसैलमा को अपने साथ लेकर नहीं गए। उसे अपने सामान की हिफ़ाज़त की ख़ातिर पीछे छोड़ गए। जब उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया तो उन्होंने मुसैलमा के बारे में वर्णन किया और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम अपने एक साथी को पीछे अपने सामान और सवारियों के पास छोड़ आए हैं। वह हमारे लिए हमारे सामान की हिफ़ाज़त कर रहा है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसैलमा के लिए भी इसी क़दर तहायफ़ का हुक्म दिया जिस क़दर लोगों को देने का इरशाद फ़रमाया था और फ़रमाया वह मर्तबा मैं तुमसे कमतर नहीं है क्योंकि वह अपने साथियों के सामान की हिफ़ाज़त कर रहा है। फिर वह वफ़्द रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से चला गया और जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसैलमा के लिए दिया था वे भी ले गए। (सीरतुन नबविय्या ले इब्ने हशाम, पृष्ठ 852 क़दुम वफ़्द बनी हनीफा दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इस वर्णन करदा रिवायत से मालूम होता है कि मुसैलमा के इलावा बनू हनीफा के वफ़्द में मौजूद समस्त लोगों की रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात हुई थी परन्तु कुछ रिवायात ऐसी भी मिलती हैं जिनमें मुसैलमा की रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात का वर्णन मौजूद है। उमूमन इसी बारे में रिवायात हैं कि मुसैलमा मिला। इस बारे में यह भी कहा जाता है कि हो सकता है जब दूसरी दफ़ा आया हो तब मिला हो। बहरहाल उसकी तफ़सील में मज़ीद लिखा है कि जब यह वफ़्द रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो इस में मुसैलमा भी मौजूद था जो दूसरी जगह लिखा है। वे लोग मुसैलमा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास इस हालत में लाए कि इस को कपड़ों से ढाँपा गया था। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा किराम में तशरीफ़ फ़र्मा थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में खजूर की एक शाख़ थी। मुसैलमा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बात चीत की और कुछ मुतालिबात किए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर तू मुझसे यह खजूर की शाख़ भी मांगे जो मेरे हाथ में है तो मैं वह भी तुझे नहीं दूँगा। (सब्लुल हुदा वर्रिशाद الباب التاسع والثلاثون فی وفود بنی حنیفه.... भाग 6 पृष्ठ 326 दारुल

शेष पृष्ठ 6 पर

जन्नत केवल ऐश और आनन्द की जगह नहीं बल्कि अत्यधिक काबिल-ए-क़दर और एक अध्यात्मिक स्थान है

जबकि जन्नत की नेअमतों के नाम दुनियावी चीज़ों जैसे रखे गए हैं लेकिन उनसे मुराद अध्यात्मिक नेअमतें हैं न कि कोई जस्मानी वस्तुएं

आखिरत की ज़िंदगी की नेअमतों को दुनियावी नाम लोगों को समझाने और उनकी तरफ़ उन्हें खीचने के लिए दिए गए हैं

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त16)

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि कुछ आज़ाद ख़्याल और तथाकथित महिलाओं के हुक़ूक़ का झंडा उठाने वाली महिलाओं का इस्लाम के ख़िलाफ़ एक आरोप यह है कि क़ुरआन-ए-करीम -और-अहादीस में मर्दों को जन्नत में मिलने वाली नेअमतों जैसे शराब, विभिन्न प्रकार के खाने और महिलाओं के मिलने का वादा है, जबकि इस दुनिया में जो व्यक्ति इन चीज़ों को इस्तिमाल करे वह बुरा इन्सान कहलाता है। इसी तरह यह वादे केवल मर्दों के लिए हैं और महिलाएं इस दुनिया में जो कुछ भी कर लें उन के लिए ऐसा कोई वादा नहीं है। इस बारे में तफ़सीली उत्तर की दरख़ास्त है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 22 मार्च 2021 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : असल बात यह है कि इस किस्म के आरोप इस्लाम की अत्यधिक सुन्दर शिक्षा से पुर्णतः अज्ञानता की वजह से पैदा होते हैं। ज़ाहिर है इस्लाम के मुख़ालेफ़ीन तो इस्लाम की शिक्षा को न जानने की वजह से ऐसे आरोप लगाया करते हैं लेकिन अफ़सोस और तकलीफ़ की बात यह है कि बहुत से मुसलमान कहलाने वाले लोग भी चूँकि केवल नाम के मुसलमान होते हैं और क़ुरआन और हदीस में वर्णन मज़हबी शिक्षा का हुसूल आवश्यक नहीं समझते और माद्दी दुनिया उनके दिल-और-दिमाग़ पर इस तरह हावी होती है कि इसी की चमक दमक के पीछे अपनी सारी ज़िंदगी गंवा देते हैं और ज़िंदगी के असल उद्देश्य और मुद्दा "उबूदीयत ख़ुदावंदी" को बिल्कुल नज़रअंदाज कर देते हैं। और उखरवी ज़िंदगी की अत्यधिक पवित्र और पाकीज़ा नामा को भी इसी दुनयावी ज़िंदगी के मेले कुचैले आईना में देखने की कोशिश करते हैं। इसलिए फिर इस किस्म के आरोप उनके दिलों में जन्म लेते हैं।

क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन जन्नत की नेअमतों को उपमा के रंग में जहां इस दुनिया की विभिन्न इश्याय के नामों से वर्णन किया गया है वहां जन्नत की इन नेअमतों को प्रत्येक किस्म की आलाईश और बुरे प्रभावों से पाक भी क़रार दिया गया।

इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ने जन्नत में मिलने वाली विभिन्न इक़साम की पवित्र शराब को कई नामों और कैफ़ीयतों के साथ वर्णन किया है जो अक़ल, उल्लास और इशक़-ए-इलाही पैदा करती हैं। खुशबू-दार, मुअत्तर और पाक हैं। और जो लोग उन्हें पीते हैं वे नाक़ाबिल-ए-वर्णन अध्यात्मिक नशे से मसरूर हो जाते हैं। इसलिए सूरः अल् साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۔ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۔ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ۔(अल् साफ़्फ़ात :46से 48)

अर्थात् (चश्मों के पानियों से भरे हुए गिलास उनके पास लाए जाऐंगे। अत्यधिक शफ़्फ़ाफ़, पीने वालों के लिए सरासर लज़्ज़त। इन (मशरूबात) में न कोई नशा होगा और न वे उनके प्रभाव से अक़ल खो बैठेंगे।

सूरः अल् वाकिया में फ़रमाया : يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۔ بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِيْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۔ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۔ (सूरः अल् वाकिया : 18 से 20) अर्थात् उनके पास ख़िदमत के लिए प्रचुरता से नौ उमर लड़कियां आएंगी जो कि हमेशा अपनी नेकी पर क़ायम रखे जाऐंगे। कटोरे और सुराहियाँ और शफ़्फ़ाफ़ पानी से भरे हुए प्याले लिए हुए। इसके असर से न वे सिरदर्द में मुबतला किए जाऐंगे, न बहकी बहकी बातें करेंगे।

सूरः अल् दुहर में फ़रमाया : اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۔ फ़रमाया

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۔ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۔(अल् दोहर:6،18،22)

अर्थात् : ख़ुदा के नेक बंदे ऐसे प्याले पियेंगे जिनमें काफ़ूर की ख़ासियत मिलाई गई होगी। और (मोमिनों) को इन (जन्नतों) में ऐसे गिलासों से पानी पिलाया जाएगा जिनमें सोंठ मिली हुई होगी। उनका रब उन्हें पाक करने वाली शराब पिलाएगा।

सूरः अल् मुतफ्फेफ़ीन में फ़रमाया : يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۔ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۔ وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۔ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ(अल् मुतफ्फेफ़ीन : 26 से 29) अर्थात् उन्हें ख़ालिस बंद शराब पिलाई जाएगी। इसके अंत में कस्तूरी होगी। और चाहिए कि इच्छा रखने वाले (इन्सान) ऐसी (ही) चीज़ की इच्छा करें। और इस में तसनीम की मिलावट होगी। (हमारी मुराद इस) चशमा (से) है जिससे मुक़र्रब लोग पियेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जन्नत की शराब की हक़ीक़त वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

और स्वच्छ शराब के प्याले जो निथरे हुए साफ पानी की तरह स्वच्छ होंगे स्वर्ग में रहने वालों को दिए जाएँगे। वह शराब उन समस्त विकारों और दोषों से पवित्र होगी कि सर दर्द पैदा करे या बेहोश और मदोन्मत कर दे। स्वर्ग में कोई व्यर्थ और बेहूदा बात सुनने में नहीं आएगी और न कोई पाप की बात सुनी जाएगी अपितु चारों और सलामती हो सुरक्षा हो जो दया और प्रेम और प्रसन्नता की निशानी है, सुनने में आएगी। उस दिन मौमिनों (ईमान लाने वालों) के मुख ताज़ा चमकदार और सुन्दर होंगे, वे अपने पालनकर्ता को देखेंगे। जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह उस संसार (परलोक) में भी अँधा ही होगा अपितु अंधों से भी गया गुज़रा। अब इन समस्त आयतों से स्पष्ट है कि वह स्वर्ग की शराब संसार की शराबों से कुछ भी अनुकूलता और अनुरूपता नहीं रखती अपितु वह अपने समस्त गुणों में उन शराबों से पृथक और विपरीत है। क़ुर्आन शरीफ़ में किसी भी स्थान पर नहीं बताया गया कि वह संसार की शराबों की भांति अंगूर, काली, मिस्री और बबूल की छाल से अथवा ऐसे ही किसी अन्य सांसारिक तत्व से बनाई जाएगी वरन् ख़ुदा की वाणी में बारम्बार यही बयान हुआ है कि उस शराब का मूल बीज प्रेम और ख़ुदा की मारिफ़त है जिसे मौमिन व्यक्ति संसार से ही साथ ले जाता है। यह बात कि वह आध्यात्मिक मामला शराब के तौर पर क्योंकर दिखाई दे जाएगा। यह ख़ुदा के रहस्यों में से एक रहस्य है जो आत्मज्ञानियों पर कश्फ़ों के माध्यम से खुलता है तथा बुद्धिमान लोग उनकी वास्तविकता तक अन्य निशानियों और लक्षणों से पहुँचते हैं

(सुर्मा चशम आर्या, रूहानी खज़ायन भाग 2 पृष्ठ 156-157)

इसी तरह जन्नत में मिलने वाले जोड़ों की पाकीज़गी को भी सराहत के साथ वर्णन करते हुए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया कि वह अत्यधिक पाक और नेक साथी होंगे जिन्हें बेशक़ीमत मोतियों की तरह ख़ेमों में छिपा कर रखा गया होगा उन्हें इन जन्नतियों से पहले किसी जिन्न और इन्स ने छुआ तक नहीं होगा। और सबसे अहम बात यह फ़रमाई कि :

وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ(सूरः अल्तूर : 21)अर्थात् हम जन्नतियों को इन अत्यधिक सुन्दर साथियों के साथ ब्याह देंगे।

अतः जन्नत केवल ऐश और आनन्द की जगह नहीं बल्कि अत्यधिक काबिल-ए-क़दर और एक अध्यात्मिक स्थान है। जबकि जन्नत की नेअमतों के नाम दुनियावी चीज़ों जैसे रखे गए हैं लेकिन उनसे मुराद अध्यात्मिक नेअमतें हैं न कि कोई जस्मानी सहूलत। यह ऐसी ही बात है जैसे कोई दौलतमंद व्यक्ति किसी ज्ञानी से कहे कि मेरे पास माल है तो वह ज्ञानी अपने पुस्तक ख़ाना की तरफ़ इशारा करके कहे कि मेरे पास तुमसे भी बढ़कर ख़ज़ाना है। इस उत्तर

शेष पृष्ठ 11 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-11)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया नमाज़ों की तलक़ीन के लिए केवल ख़ुतबा दे देना पर्याप्त नहीं बल्कि घरों में सम्पर्क करके ध्यान दिलाएँ और ताकीद करें। नमाज़ बाजमाअत प्रत्येक व्यक्ति पर कर्तव्य है बार-बार ध्यान दिलाते रहें।

मुबल्लिग़ सिलसिला लबीब अहमद मिर्ज़ा साहब ने बताया कि वह भी ख़ुतबा जुमा में नमाज़ के हवाला से ध्यान दिलाते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया केवल ख़ुतबा में ध्यान दिलाना पर्याप्त नहीं। आपका प्रत्येक फ़ैमिली से ज़ाती सम्पर्क होना ज़रूरी है। आप यह विश्वसनीय करवाएं कि आप उनके हमदर्द हैं। वह आपकी बात सुनेंगे और जमाअत के सैंटर में आएँगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नमाज़ों पर हाज़िरी बढ़ाने के लिए नैशनल सेक्रेटरी तर्बीयत, क़ायद तर्बीयत, मुहतमिम तर्बीयत और दूसरी जमाअतों और मजालिस के विभाग तर्बीयत का ग्रासरूट लेवल पर काम करना ज़रूरी है और नमाज़ों की ओर ध्यान दिलाने के साथ, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत की ओर ध्यान दिलाएँ और फिर ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को एम.टी.ए. से संलग्न करें और मेरा ख़ुतबा जुमा नियमित सुनें :

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके पास इस का डाटा होना चाहिए कि कौन से लोग हैं जो नियमित ख़ुतबा सुनते हैं और कौन से ऐसे हैं जो इस में कमज़ोरी दिखा रहे हैं :

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एम.टी.ए. पर विभिन्न प्रोग्राम आते हैं। प्रत्येक अपनी दिलचस्पी के प्रोग्राम देख सकता है।

सेक्रेटरी तर्बीयत ने ख़ुतबा जुमा के हवाला से बताया कि 80 प्रतिशत नियमित ख़ुतबा सुनते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके पास यह इन्फ़ार्मेशन होनी चाहिऐं कि कितने हैं जो महीने के चारों ख़ुतबात सुनते हैं या तीन या दौ सुनते हैं। इसी तरह तिलावत क़ुरआन-ए-करीम का भी जायज़ा लें और करें।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद क़ुरआन-ए-करीम का नियमित दर्स होना चाहिए। इसी तरह नमाज़ मगरिब या नमाज़ इशा के बाद मलफ़ूज़ात या हदीस इत्यादि क़ा दर्स होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया। शादी से पूर्व लड़के और लड़की की कौंसलिंग का प्रोग्राम होना चाहिए। लड़के और लड़की दोनों को उनके हुक़ूक़ और कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों क पता होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दोनों मुबल्लग़ीन कौंसलिंग कमेटी के मेंबर हो सकते हैं। दोनों मुबल्लग़ीन में से एक का कौंसलिंग के मध्य होना ज़रूरी है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया देश के अंदर जो रिश्ते हो रहे हैं उनकी कौंसलिंग ज़रूर होनी चाहिए। कौंसलिंग में बताएं कि क़ुरआन-ए-करीम ने क्या हुक़ूक़ और कर्तव्य निर्धारित किए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत और अहादीस की रोशनी में बताएं। शादी ब्याह के हवाला से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षाएं बताएं। आपके इर्शादात की रोशनी में समझाएँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया निकाह का ख़ुतबा देते हुए मसनूना आयात का अनुवाद बताया करें ताकि लोगों को पता चले क़ुरआन-ए-करीम की क्या शिक्षा है। क्या हुक़ूक़ हैं क्या ज़िम्मेदारी हैं।

आमिला के एक मेंबर ने कहा कि हमारे एक मुरब्बी साहब की अभी शादी होने वाली है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एक मुरब्बी की पत्नी, मुरब्बी की तरह क़ुर्बानी करने वाली होनी चाहिए और मुरब्बी के साथ वक़्फ़ निभाने वाली हो।

नैशनल सेक्रेटरी तब्लीग़ ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि हमने दो लाख लीफ़ लेट्स तक़सीम किए हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : सबसे पहले जो लीफ़ लेट्स दें वह अमन के संदेश के हवाला से हो। इस में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वह कोटेशन दें जो अमन का संदेश देती है।

फिर दूसरा लीफ़ लेट्स तक़सीम हो जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद का वर्णन हो। Messiah of the Age पर हो। फिर इसके बाद इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं पर आधारित लीफ़ लेट हो और बताया जाए कि संसार की बका इन शिक्षाओं पर अनुकरण करने के परिणाम में है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यहां मस्जिद में साऊँड सिस्टम के लिए जो इलेक्टरेशन आया था वह बहुत प्रभावित हुआ है और उसने इस बात का प्रकटन किया है कि मुझे यहां ख़ुदा मिल गया है। उसने हमारे साथ नमाज़ें भी पढ़ीं हैं। तो इस तरह के जो लोग हैं उनसे सम्पर्क Follow up करें।

पार्लियामेंट में एक मेंबर ने कहा था कि मैं लगभग Convert हो चुका हूँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप बीज फैंकें और ज़ाती सम्पर्क बढ़ाईं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपकी आमिला के 22 सदस्य हैं। आमिला का प्रत्येक मेंबर एक लोकल आइरिश से सम्पर्क करे। यदि चौथा हिस्सा भी सफ़ल हो जाएगी तो पाँच छः बैअतें आपको इस पहले वर्ष में मिल जाएँगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इसी तरह मंसूबा बंदी करके अनुकरणी तौर पर प्रभावी प्रोग्राम बनाएँ और अपने ज़ाती रवाबित और संबंध बढ़ाने की ओर ध्यान दें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अब यहां मस्जिद के उद्घाटन की R T रेडियो और अख़बारात ने कवरेज दी है। लाखों लोगों तक संदेश पहुंचा है। अब आपका काम है इस से लाभ उठाए और यहां Break Through करें।

लीफ़ लेट्स की तक़सीम के हवाला से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ये लोग जान लेंगे कि अहमदियत क्या है। इन लोगों को यह मालूम नहीं कि आपके प्रोग्राम क्या हैं। आप किस किस्म के मुस्लमान हैं। आपका आचरण क्या है। हम इस तरह के मुस्लमान नहीं हैं जिस तरह दूसरे मुस्लमान हैं। हम उनसे अलग हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि सीधा बिना किसी परिचय के तब्लीग़ करेंगे तो कोई आपकी बात नहीं सुनेगा। यदि आप पहले जमाअत का परिचय करवा चुके होंगे तो फिर लोगों से मिलकर सम्पर्क करके बात करेंगे तो लोग आपकी बात सुनेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बहुत से लोगों ने यहां कहा है और इस बात का प्रकटन किया है कि वह पहले इस्लाम के बारे में सही मालूमात, अच्छी मालूमात नहीं रखते थे परन्तु अब इस्लाम का हक़ीक़ी संदेश मिलने के बाद इस्लाम के बारे में हमारे विचारों में बदलाव हुआ है।

अब आप का काम कि नियमित Follow up करें और उन लोगों से सम्पर्क रखें।

सेक्रेटरी तब्लीग़ ने कहा कि मुबल्लिग़ इंचार्ज साहब हमें बैअतों का ज़्यादा टार्गेट देते हैं जो हम से पूरा नहीं होता तो हमे नदामत होती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने Disappointed नहीं होना बल्कि यह देखें कि हमारी कोई कमियां रह गई हैं और अगली बार इन कमियों को दूर करने का प्रयास करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछ देशों का सालाना बजट मुकम्मल नहीं होता। परन्तु इसके अतिरिक्त वह आइन्दा वर्ष अपना बजट कम नहीं करते बल्कि मज़ीद बढ़ा कर प्रस्तुत करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यहां के दोनों मुबल्लिग़ इस वर्ष दो दो बैअतें करवाए और इसके अतिरिक्त नैशनल मज्लिस-ए-आमला आयरलैंड छः और ख़ुद्दाम, अंसार और लजना पाँच पाँच बैअतें करवाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया गालवे Galway में ग्राऊंड तैयार है। आपने अब बीज बोना है और काम करना है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : स्वीडन ने तीन लाख लीफ़ लेट्स तक़सीम किए हैं छोटी जमाअत है। इसी तरह स्पेन में पिछले वर्ष जामिया यू.के के विद्यार्थियों को भिजवाया गया था। उन्होंनो दो तीन हफ़्तों में पौने तीन लाख लीफ़ लेट्स तक़सीम किए। पिछले दिनों जामिया के आठ विद्यार्थी सैर के उद्देश्य से स्पेन गए थे। उन्होंने अपने क़ियाम में 50 हज़ार से अधिक लीफ़ लेट्स तक़सीम किए हैं। तक़सीम के मध्य लोग उनकी हौसला-अफ़ज़ाई करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया वालनस्या में ट्रेन से उतरने वाले एक मुसाफ़िर को जब लीफ़ लेट दिया गया तो उसने कहा मैं बार्सिलोना से आ रहा हूँ। वहां मुझे एक

नौजवान ने यह लीफ़ लेट दिया था। यह मेरी जेब में है इस लिए उस ने निकाल कर दिखाया। उस ने यह सँभाल कर रखा हुआ था। फेंका नहीं था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया साठ प्रतिशत से अधिक लोग सँभालते हैं और पढ़ते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब बड़ी संख्या में लोगों को जमाअत का परिचय हो रहा है।

सदर अन्सारुल्लाह डाक्टर अलीम साहब ने बताया कि अपनी Job के सिलसिला में एक यात्रा के मध्य एक नौजवान से सम्पर्क हुआ। धर्म के बारे में बात हुई तो उस ने बताया मुझे अहमदियों की ओर से एक लीफ़लेट मिला था। मैंने सारा पढ़ा है इस लिए उस को जमाअत के बारे में बताया और स से सम्पर्क क़ायम हो गया। उस को मस्जिद लेकर आया और अब उस से सदैव सम्पर्क है।

हुज़ूर ने फ़रमाया अब इस व्यक्ति को मज़ीद लिटरेचर दें। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" दें। पुस्तक "लाईफ़ आफ़ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" दें।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आप रेलवे स्टेशन पर जाकर लीफ़ लेट्स तक़सीम करें। बस स्टॉप पर दें। आपने केवल एक दो जगहों पर नहीं रहना बल्कि रास्ते Explore करें और बड़े पैमाना पर लीफ़लेट्स तक़सीम करें। मार्कीट में खड़े हो जाएं वहां तक़सीम करें। आप लोगों के हाथों में ही दे रहे होंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया Door to Door का अर्थ यह था कि प्रत्येक घर तक पहुंच जाए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : महिलाओं ने अपना प्रोग्राम आर्गेनाईज़ कर रही हैं। उन्होंने मीना-बाज़ार के ढंग पर अपना प्रोग्राम बनाया है और कार्ड भी तक़सीम किया ताकि लोग आएं और उनका जमाअत से सम्पर्क क़ायम हो। फ्लावरज़ की तक़सीम हो और वह लिटरेचर भी प्राप्त करें और इस तरह तब्लीग़ होगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत इस्लाम आबाद यू.के ने भी एक Fair की ढंग पर प्रोग्राम बनाया था। जहां खाने पीने की चीज़ों के अतिरिक्त लिटरेचर भी रखा था। लोग आए थे उन को लिटरेचर भी दिया। उनमें दिलचस्पी पैदा हुई। प्रश्न और उत्तर भी हुए और उनसे एक सम्पर्क बन गया और यह प्रोग्राम तब्लीग़ का माध्यम बन गया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुद्दामुल अहमदिया भी इस ढंग का प्रोग्राम आर्गेनाईज़ कर सकती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो भी प्रोग्राम करें चाहे नुमाइश का प्रोग्राम हो, मीना-बाज़ार का प्रोग्राम हो या कोई और प्रोग्राम हो, असल उद्देश्य और उद्देश्य यह हो कि तब्लीग़ के लिए सम्पर्क हों। हमारा असल उद्देश्य लोगों तक इस्लाम का संदेश पहुंचाना है।

हुज़ूर अनवर की सेवा में यह रिपोर्ट प्रस्तुत हुई कि यहां प्रत्येक वर्ष सऊदी अरब से 15 हज़ार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उनसे सम्पर्क करें। ये लोग अपने सिस्टम से FED UP हैं और जो पढ़े लिखे हैं वह वहाबी इज़म और सलफ़ी इज़म से तंग हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में यह कहा गया कि Cork जमाअत की ज़रूरीयात बढ़ रही हैं। वहां जमाअत के पास कोई सैंटर नहीं है। जहां लोगों इकट्ठे हो सकें और जो तब्लीग़ी सम्पर्क हैं उनको वहां बुलाया जा सके। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। वहां अपने सैंटर के लिए जगह देखें। कोई इमारत देख लें, अपनी आवश्यकता के अनुसार तलाश करें और फिर मुझे बताएं। हुज़ूर अनवर ने अख़राजात के हवाले से कुछ प्रशासनिक हिदायाते दीं।

देश के दार-उल-हकूमत डबलिन में मस्जिद के क़ियाम के बारे में मज़ीद हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। शहर के बाहर के इलाक़े में देखें। जहां लोग जा सकें और ऐसी जगह देखें जो हमारी ज़रूरीयात के अनुसार हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने आमिला के सदस्यों को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आम अहमदी को जमाअती अधिकारियों से शिकायात हैं। आप लोगों के साथ नरम हमदर्दाना और मुख़लिसाना रवैय्या रखें। प्रत्येक की बात सुनें और ख़ादिम बन कर काम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यही फ़रमाया है कि "सय्यददुल क़ौमे ख़ादिमोहुम" कि क़ौम का सरदार क़ौम का ख़ादिम होता है।

हुज़ूर अनवर ने आमिला सदस्य से दरयाफ़त फ़रमाया कि जमाअत यू.के की मज्लिस-ए-शूरा से जो मैंने ऐडरैस किया था क्या आप सबने सुन लिया है। इस पर नैशनल सदर साहब ने कहा कि हम सबने अपनी एक आमिला मीटिंग में सुन लिया था।

मीटिंग के अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ऐडीशनल सेक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद नौ मुबाईन यूसुफ़ Pender साहब को हिदायत फ़रमाई कि इस वर्ष के लिए आपका टार्गेट भी दो बैअतें हैं। दोनों मुरब्बियान और आप तीनों का टार्गेट दो दो बैअत का है। देखते हैं कि आप तीनों में से कौन यह हदफ़ प्राप्त करता है।

एक बजकर दस मिनट पर यह मीटिंग अंत को पहुंची। अंत में सदस्य मज्लिस-ए-आमला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

समारोह

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मर्यम तशरीफ़ ले आए जहां आमीन का समारोह का हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक एक आयत सुनी और आमीन करवाई।

प्रिय हारिस अहमद, रौहान मलिक, महमूद शर्मा, बासिल अब्दुल वदूद, जहांगीर रशीद, नस्र सईद, अब्दुल माज़ मलिक, वलीद अहमद, हमज़ा अहमद, सग़ीर अहमद, ख़ाक़ान अहमद, प्रिय जाज़िबा ख़ान, दानिया अहमद, लबीबा इफ़्तिख़ार, समेरा ख़ान, प्रिय तंज़ीला।

एक आइरिश नौजवान यूसुफ़ Pender साहब ने कुछ वर्ष पूर्व बैअत की थी। अहमदियत स्वीकार करने के बाद उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम सीखा है और क़ुरआन-ए-करीम मुकम्मल किया है। वह की भी आमीन हुई। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक उनसे क़ुरआन-ए-करीम की कुछ आयात सुनी और दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई।

नमाज़ की अदायगी के बाद जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद से बाहर पधारे तो मस्जिद के साऊँड सिस्टम के लिए यहां उपस्थित आइरिश नौजवान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक को किताब The Conference of World Religions (GuildHall) अता फ़रमाई।

इसके बाद मस्जिद के बाहरी सेहन में एम.टी.ए. इंटरनैशनल की टीम ने जो लंदन से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की यात्रा और प्रोग्रामों की कवरेज और लाईव प्रसारण के लिए आयरलैंड गई थी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद तरतीब से दोनों मुबल्लग़ीन आयरलैंड, इब्राहीम नोंन साहब और रबीब अहमद मिर्ज़ा और लोकल मज्लिस-ए-आमला जमाअत गालवे ने तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के का विभाग उमूमी के पाँच ख़ुद्दाम पर आधारित सिक्योरिटी टीम भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस आयरलैंड की यात्रा में क़ाफ़ला के साथ थी। इस टीम ने भी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

शेष आगे .....

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

क़ुतुब इल्मिया 1993 ई.)

सही बुख़ारी में मौजूद रिवायात से मालूम होता है कि मुसैलमा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात के लिए नहीं गया था बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं उस के पास तशरीफ़ ले गए थे। इसलिए उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा् ने वर्णन किया कि हमें यह ख़बर पहुंची कि मुसैलमा कज़्ज़ाब मदीना आया और हारिस की बेटी के घर में उतरा और हारिस बिन कुरेज़ की बेटी उस की बीवी थी और वह अब्दुल्लाह बिन आमिर की माँ थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हो थे और ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़तीब कहलाते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में एक छड़ी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुसैलमा के पास खड़े हुए और उस से बात चीत की। मुसैलमा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चाहें तो हमारे मध्य और इस विषय के मध्य हमें छोड़ दें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे अपने बाद हमारे लिए निर्धारित कर दें। अर्थात नबुव्वत का जो मुआमला है उस का जो फ़ैसला हो या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नबुव्वत हमें मिल जाए। यही उस का ज़्यादा बड़ा मुतालिबा था। तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम मुझ से यह छड़ी भी माँगो तो मैं तुम्हें यह नहीं दूँगा और मैं तुझे वही व्यक्ति समझता हूँ जिसके बारे में मुझे स्वपन दिखाया गया है जो मुझे दिखाया गया। और यह साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो है, वह मेरी तरफ़ से तुम्हें उत्तर देगा। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापिस तशरीफ़ ले गए। (सही अल् बुखारी किताब अल् मग़ाज़ी, بَابُ قِصَّةِ الْأَسْوَدِ الْعَنْسِيِّ ,नंबर 4378)

इसी तरह एक और रिवायत में वर्णन है हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि मुसैलमा कज़्ज़ाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में आया और कहने लगा कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बाद मुझे जांनशीन बनाएँ तो मैं उनकी पैरवी करूँगा। यह फिर पहली रिवायत की वज़ाहत होती है और वह वहां अपनी क़ौम के बहुत से लोगों के साथ आया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्स थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में खजूर की एक छड़ी थी यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुसैलमा के सामने जबकि वह अपने साथियों में था खड़े हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर तू मुझ से यह छड़ी भी मांगे तो मैं तुझे यह भी नहीं दूँगा और तू अपने विषय में कदापि अल्लाह के फ़ैसले से आगे नहीं बढ़ सकता और अगर तू ने पीठ फेरी तो अल्लाह तेरी जड़ काट देगा और मैं देखता हूँ कि तू वही व्यक्ति है जिसके विषय में मुझे स्वप्न में बहुत कुछ दिखाया गया है। और यह साबित हैं अर्थात साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो जो मेरी तरफ़ से तुझे उत्तर देंगे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसको छोड़कर वापस चले गए। यह रिवायत भी बुख़ारी की है।

(सही अल् बुखारी, किताब अल् मग़ाज़ी, बाब وَفْدِ بَنِي حَنِيفَةَ، وَحَدِيثِ ثُمَامَةَ بْنِ أُثَالٍ ,नंबर 4373)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद के विषय में पूछा कि तुमको में वही व्यक्ति पाता हूँ जिसके विषय में मुझे ख़ाब में वे कुछ दिखाया गया जो दिखाया गया। हज़रत हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझ से कहा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक-बार मैं सोया हुआ था इस अस्ना में मैं ने अपने हाथ में सोने के दो कंगन देखे। (यह ख़ाब का वर्णन हो रहा है)। उनकी कैफ़ीयत ने मुझे फ़िक्र में डाल दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं ने ख़ाब में कंगन देखे इस कैफ़ीयत ने मुझे फ़िक्र में डाला। फिर मुझे ख़ाब में वह्यी की गई कि मैं उन पर फूँकों। इसलिए मैं ने उन पर फूँका और वे उड़ गए। मैं ने उनकी ताबीर दो झूठे व्यक्ति समझे जो मेरे बाद ज़ाहिर होंगे। रावी अबैदुल्लाह ने कहा। उनमें से एक उंसी है जिसको फ़िरोज़ ने यमन में मार डाला और दूसरा मुसैलमा कज़्ज़ाब है। यह भी बुख़ारी की रिवायत है।

(सही अल् बुखारी, किताब अल् मग़ाज़ी, بَابُ وَفْدِ بَنِي حَنِيفَةَ، وَحَدِيثِ ثُمَامَةَ بْنِ أُثَالٍ، रिवायत नंबर 4374) (सही अल् बुखारी किताब अल् मग़ाज़ी, बाब باب قصة الاسود العنسى रिवायत नंबर 4379)

बहरहाल ऊपर वर्णित रिवायात से यही लगता है कि मुसैलमा कज़्ज़ाब एक से ज़्यादा मर्तबा मदीना आया था। एक मर्तबा उस वक़्त जब उस के वफ़द वाले उसे सामान की हिफ़ाज़त के लिए पीछे छोड़ गए थे और उस की मुलाक़ात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नहीं हो सकी थी और दूसरी मर्तबा वह उस वक़्त मदीना आया था जब उसकी मुलाक़ात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुई थी और जिसमें उस ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जांनशीन बनने का मुतालिबा किया था। इस हवाले से सही बुख़ारी की शरह फ़तह अलबारी में लिखा है कि सम्भव है कि मुसैलमा दो दफ़ा मदीना आया हो। पहली दफ़ा उस वक़्त जब बनू हनीफा का रईस उस के बजाय कोई और था। अर्थात उस वक़्त वह क़बीला का रईस नहीं था। कोई और था और यह उस के अधीन था। इसी वजह से उसे सामान की हिफ़ाज़त के लिए पीछे छोड़ गए थे। और दूसरी मर्तबा वह उस वक़्त आया जब लोग उस के ताबे थे और उस वक़्त ही नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस से बात चीत हुई थी या यह भी सम्भव है कि एक ही वाक़िया हो और वह अपनी मर्ज़ी से अपने समर्थन और इस बात पर-तकब्बुर करते हुए कि वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस में हाज़िर हो सामान के पास रुक गया हो लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तालीफ़-ए-क़लब की आदत की वजह से इस से इज़्ज़त का सुलूक किया। फिर हदीस में यह भी वर्णन है कि वह एक बड़ी संख्या के साथ आया था। कहा जाता है कि वह सतरह लोगों के साथ आया। यह बात भी मुसैलमा के एक से ज़ाइद दफ़ा मदीना आने की दलील है। (उद्धरित फ़तह अलबारी, शरह सही अल् बुखारी ले इब्ने हिज्र, भाग 8 पृष्ठ 112 रिवायत 4373 क़दीमी कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची)

बहरहाल जब यह वफ़द वापस यमामा पहुंचा तो अल्लाह तआला का दुश्मन मुसैलमा मुर्तद हो गया और उसने नबुव्वत का दावा कर दिया और कहा मुझे भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नबुव्वत में शरीक कर लिया गया है।

क्या जब तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मेरा वर्णन किया था तो उन्होंने यह नहीं कहा था कि वह मुक़ाम-ओ-मर्तबा के एतबार से तुमसे बुरा नहीं है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह केवल इसलिए कहा था कि आप जानते थे कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबी हैं और बनू हनीफा जानते थे कि मुझे भी आपके विषय में शरीक कर लिया गया है। फिर मुसैलमा बनावट कर के कलाम बनाने लगा और लोगों के लिए क़ुरआन-ए-करीम की नक़ल करते हुए कलाम बनाने लगा और उनसे नमाज़ माफ़ कर दी। उसने अपनी ही शरीयत शुरू कर दी। नमाज़ माफ़ कर दी। एक रिवायत के मुताबिक़ उसने दो नमाज़ें नमाज़ इशा और फ़ज्र माफ़ कर दी थी और लोगों के लिए शराब और व्यभिचार को हलाल क़रार दे दिया। इसके साथ वह यह भी गवाही देता कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबी हैं। बनू हनीफा ने इन बातों पर इस से सहमती कर ली।

(उद्धरित सब्लुल हुदा वर्रिशाद الباب التاسع والثلاثون فى وفود بنى حنيفه... भाग 6 पृष्ठ 326 दारुल क़ुतुब इल्मिया 1993 ई.)(उद्धरित तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 271 दारुल कुतुबु इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

एक और सबब जिसने मुसैलमा की ताक़त बढ़ाई वह था रज्जाल बिन उन्फूवः का इस से मिल जाना। बड़ी होशयारी से उसने एक तो यह कि आसानियां पैदा कर दीं कि शरीयत में यह यह आसानियां हैं और मुझे भी अल्लाह तआला ने वह्यी की है और साथ यह भी तस्लीम करता था कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबी भी हैं ताकि जो लोग मुस्लमान हुए थे उनमें किसी को यह एहसास पैदा न हो कि हमें यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दूर ले के जा रहा है। बड़ी मुनाफ़क़त से उसने ये सारे काम किए। बहरहाल लिखा है कि एक और सबब जिस ने मुसैलमा की ताक़त बढ़ाई वह था रज्जाल बिन उनफुवः का उस से मिल जाना। यह व्यक्ति भी यमामा का ही रहने वाला था और बनू हनीफा के वफ़द के साथ भी आया था। हिज्रत कर के नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मदीना आ गया था यहां उसने क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा और दीनी तालीम हासिल की।

जब मुसैलमा ने इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे यमामा वालों की तरफ़ मुअल्लिम बना कर भेजा और लोगों को मुसैलमा की इताअत से रोकने के लिए भेजा लेकिन यह मुसैलमा से ज़्यादा फ़ित्ना का बायस हुआ।

जब उसने देखा कि लोग मुसैलमा की इताअत क़बूल करते जा रहे हैं तो वे उन लोगों की नज़रों में अपने आपको सुर्ख़रु करने के लिए उनके साथ मिल गया। भेजा

तो इसलिए गया था ताकि वहां इस्लाह करे और फ़ित्ना का निवारण करे लेकिन यह मुसैलमा के साथ शामिल हो गया और मुसैलमा की नबुव्वत का झूठा इक़रार करने के साथ साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब से एक झूठा कथन भी मंसूब किया कि मुसैलमा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नबुव्वत में शरीक किया गया है। यह भी उसने मशहूर कर दिया। क़ुरआन-ए-करीम का इलम हासिल किया था इसलिए लोगों ने उसकी बातों पर यक़ीन भी कर लिया। जब यमामा वालों ने देखा कि एक ऐसा व्यक्ति मुसैलमा की नबुव्वत की गवाही दे रहा है जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथियों में से है और वह लोगों को क़ुरआन-ए-करीम की तालीम से आगाह करने वाला है तो उन लोगों के लिए मुसैलमा की नबुव्वत से इंकार की गुंजाइश नहीं रही और लोग गिरोह गिरोह मुसैलमा के पास आकर उसकी बैअत करने लगे।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन (अनुवादक) पृष्ठ187-188) (तारीख़ इब्ने ख़ुलदून, भाग 2 पृष्ठ 437-438 ख़बर मुसैलमा वल यमामा, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.)

मुसैलमा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ एक पत्र भी लिखा जिसका मतन इस तरह से है कि अल्लाह के रसूल मुसैलमा की जानिब से मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़। इसके बाद, नसफ़ ज़मीन हमारी है और नसफ़ क़ुरैश की परन्तु क़ुरैश इन्साफ़ नहीं करते।

इसके उत्तर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे पत्र लिखा कि बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुहम्मद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब से मुसैलमा कज़्ज़ाब के नाम। इसके बाद, निसंदेह ज़मीन अल्लाह ही की है वह अपने बंदों में से जिसे चाहेगा उसका वारिस बना देगा और आक़िबत मुत्तक़ियों की ही हुआ करती है और उस पर सलामती हो जो हिदायत की पैरवी करे।

(फ़ुतूहुल बुल्दान للامام ابی الحسن احمد بن یحیی البلاذری, पृष्ठ 59 - 60 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत हबीब बिन ज़ैद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र लेकर मुसैलमा के पास गए थे। जब उन्होंने यह पत्र मुसैलमा को दिया तो उसने कहा कि क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं? उन्होंने फ़रमाया हाँ। फिर उसने कहा क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? उन्होंने फ़रमाया कि मैं बहरा हूँ। मैं सुनता नहीं। बात टाल दी। यह चाहता था कि वह तस्लीम करें कि वह भी नबी है। मुसैलमा बार-बार यही सवाल दोहराता रहा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उत्तर देते रहे और प्रत्येक मर्तबा जब हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हो उसके मंशा का उत्तर नहीं देते। जब उसे मंशा का उत्तर नहीं मिलता तो वह उनके जिस्म का एक अंग काट देता। टार्चर करने के लिए कि अब उत्तर हाँ में दो। वह उनका कोई न कोई अंग काट देता। हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हो सब्र-और-इस्तेकामत का पहाड़ बने रहे यहां तक कि उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के टुकड़े टुकड़े कर डाले। इसके सामने हज़रत हबीब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जाम-ए-शहादत नोश कर लिया।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, शख़्सियत और कारनामे अज़ सलाबी पृष्ठ 349)

मुसैलमा ने यमामा में बग़ावत का झंडा बुलंद कर दिया था।

अब यह केवल नबुव्वत का दावा नहीं है बल्कि ज़ुलम भी है। किस तरह उसने अपने आपको नबी न मानने वालों से सुलूक किया। मुसैलमा ने यमामा में बग़ावत का झंडा बुलंद कर दिया और यमामा में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आमिल हज़रत सुममा बिन उसाल रज़ियल्लाहु अन्हो को निकाल दिया।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपती, पृष्ठ 101 इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)(तारीख़ अलख़मीस, भाग 3 पृष्ठ 81 किस्सतुल स्ज्जाह, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुर्तद होने वालों की तरफ़ मुख़्तलिफ़ लश्कर भेजे तो हज़रत अक्रमा रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में एक लश्कर मुसैलमा की तरफ़ भी भेजा और उनकी सहायता के लिए उनके पीछे हज़रत शुरहबील बिन हुसना रज़ियल्लाहु अन्हो को रवाना फ़रमाया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो को यह ताकीद फ़रमाई कि शुरहबील को पहुंचने से पहले मुसैलमा से लड़ाई नहीं छेड़ना परन्तु हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जल्दबाज़ी से काम लिया और हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो पहुंचने से पहले ही यमामा वालों पर हमला कर दियाता कि कामयाबी का सहरा उनके सिर आए परन्तु वह मुसीबत में फंस गए और उन्हें शिकस्त का सामना करना पड़ा। मुसैलमा की फ़ौज बहुत बड़ी थी। हज़रत शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हो को जब इस वाक़िया की ख़बर मिली तो वह रास्ते में ही रुक गए और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ इस वाक़िया के विषय में लिखा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको लिखा कि मैं तुम्हारी सूरत नहीं देखूँगा और न तुम मुझे देखना। जो मैं ने तुम्हें कहा था तुमने उस हिदायत की ना-फ़रमानी की है। यहां लौट कर मत आना चाहे लोगों में बुज़दिली पैदा हो। तुम हज़रत हुज़ैफ़ा और अर्फजा के पास चले जाओ और उनके साथ मिलकर उम्मान और महरह वालों से जंग करो। मोहरा भी अरब के जुनूब में मशरिक़ी किनारे पर हिन्द के समुद्र के किनारे एक इलाक़ा है और फिर वहां से अपनी फ़ौज के हमराह यमन और हज़र मोत में जाना और वहां जा कर इस्लामी लश्कर से जा मिलना। हज़र मोत भी यमन के मशरिक़ में एक देश है जिनकी जुनूबी सरहद पर समुंद्र है।

एक और रिवायत में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पत्र के शब्द इस तरह से मिलते हैं कि उस्तादी जानते नहीं। शागिर्दी से घबराते हो। इतना भी तुम्हें सही तरह पता नहीं। जंगों के जो तरीक़े सलीक़े होते हैं इस में जितना माहिर होना चाहिए इतने तुम हो नहीं और सीखने से घबराते हो। जिस दिन तुम मुझ से मिलोगे देखो तुम्हारे से कैसा सुलूक करता हूँ। तुम उस वक़्त तक क्यों न ठहरे कि शुरहबील आ जाते और उनकी सहायता और सहयोग से जंग करते। अब हुज़ैफ़ा के पास जाओ और सहायता पहुँचाओ।

तुमने अब ख़लीफ़-ए-वक़्त के हुक्म की ना-फ़रमानी की है और अपने आपको बड़ा उस्ताद समझते हो और सीखना नहीं चाहते। अब यही है कि अब मेरे पास न आना। जब मिलोगे तो फिर मैं देखूँगा तुम्हारे से सुलूक क्या करना है लेकिन बहरहाल फ़िलहाल अब (काम) यही है कि तुम हुज़ैफ़ा के पास जाओ और उनकी सहायता करो। उनके साथ मिलकर जिस मुहिम को वे पार करने के लिए भेजे गए हैं इस में उनकी सहायता करो। अगर उनको तुम्हारी पुश्तपनाही की ज़रूरत न हो तो यमन और हज़र मौत चले जाओ और मुहाजिर बिन उमय्या की सहायता करो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहाजिर बिन उमय्या को किनदह क़बीला के मुक़ाबले के लिए हज़रमोत में भिजवाया हुआ था।

(जीवनी ख़लीफ़तुल रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ तालिब हाशमी, पृष्ठ 204) (उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामिया , भाग 21पृष्ठ 898 शब्द हज़रमोत)(उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामिया, भाग 8 पृष्ठ 408 शब्द हज़रमोत)(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के सरकारी पत्र,पृष्ठ 24 मुद्रित 1960ई.)(उद्धरित तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 257)(उद्धरित الکامل فی التاریخ لابن اثیر, भाग 2 पृष्ठ 218-219 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत शुरहबील को किसी दूसरे हुक्म के आने तक वहीं ठहरने का हुक्म दिया। फिर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को यमामा की तरफ़ भेजने से पहले शुरहबील को लिखा कि जब ख़ालिद तुम्हारे पास आएं और यमामा की सहायता से फ़ारिग़ हो जाओ तो क़ुज़ाह का रुख करना और हज़रत अमरो बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हो कर क़ुज़ाह के इन बाग़ीयों की ख़बर लेना जो इस्लाम लाने से इंकार करें और इस की मुख़ालिफ़त पर कमरबस्ता हों। (तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 275- मुद्रित दारुल कुतुबु इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

केवल इंकार नहीं है बल्कि मुख़ालिफ़त भी है। हज़रत शुरहबील भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की हिदायत के विपरीत हज़रत अक्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह जल्दबाज़ी से काम लिया और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के इन तक पहुंचने से पहले ही मुसैलमा से लड़ाई शुरू कर दी परन्तु उन्हें भी शिकस्त का सामना करना पड़ा जिस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की सहायता के लिए हज़रत सलीत रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत में मज़ीद कमक भी रवाना फ़रमाईता कि वह उनके अक़ब की हिफ़ाज़त करे। (उद्धरित अल् कामिल फ़ील-तारीख़ ले इब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 219 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसैलमा की तरफ़ भेजा और उनके साथ मिलकर जंग करने के लिए मुहाजेरीन और अंसार की एक जमाअत भी रवाना फ़रमाई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अंसार पर हज़रत साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो और मुहाजेरीन पर हज़रत

अबू हज़ेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर निर्धारित फ़रमाया और इस तरह जितने क़बायल थे उनमें से प्रत्येक क़बीले पर एक आदमी को निगरान बनाया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु बुतहा स्थान पर इस लश्कर की आमद का इंतिज़ार कर रहे थे। बुतहा बनी तमीम के इलाक़े में एक जगह है। बहरहाल जब ये सब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंच गए तो वह यमामा की तरफ़ रवाना हुए। बनू हनीफा उस दिन बहुत ज़्यादा थे। उनकी संख्या चालीस हज़ार जंगजू पर मुश्तमिल थी। यमामा के ये लोग जो मुसैलमा के साथ थे उनकी संख्या चालीस हज़ार थी या एक रिवायत के मुताबिक़ उनकी संख्या एक लाख या इस से भी ज़्यादा थी जबकि मुस्लमान दस हज़ार से अधिक थे।

(अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 267 दारुल क़ुतुब इल्मिया)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 58)

बहरहाल वहां जब यह जंग शुरू होनी थी तो इस बड़े मार्के से पहले ही मुस्लमानों ने बनू हनीफा के एक सरदार को गिरफ़्तार कर लिया। इसलिए एक रिवायत में वर्णन है कि मुज्जाह बिन मुर्रा जो कि बनू हनीफा का एक सरदार था एक गिरोह के साथ बाहर निकला तो मुस्लमानों ने उसे और उसके साथियों को पकड़ लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस के साथियों को क़तल कर दिया और मुज्जाह को ज़िंदा रखा क्योंकि बनू हनीफा में उस की बहुत इज़्ज़त थी।

(उद्धरित अल् कामिल फिल-तारीख़ ले इब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 219 - 220 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.) (तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 278 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2012 ई.)

इस की मज़ीद तफ़सील यह है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु जब आरिज़ मुक़ाम पर उतरे तो उन्होंने दो सौ घुड़सवार आगे भेजे और फ़रमाया जो लोग भी तुम्हें मिलें उन्हें पकड़ लें। वे घुड़सवार रवाना हुए यहां तक कि उन्होंने मुज्जाह बिन मुर्रा हनफ़ी को उस के तेईस हम क़बीला लोगों के साथ पकड़ लिया जो बनू नुमेर के एक व्यक्ति की तलाश में निकले हुए थे। वह बाहर निकले थे और उन्हें ख़ालिद के आने का इलम नहीं था। मुस्लमानों ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो? उन्होंने कहा हम बनू हनीफा से हैं। मुस्लमानों ने समझा कि वे ख़ालिद की तरफ़ मुसैलमा के दूत हैं। जब सुबह हुई और लोग आमने सामने हुए तो मुस्लमान उन लोगों को लेकर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब उन्हें देखा तो उन्होंने भी यही समझा कि वे लोग मुसैलमा के सन्देशक हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे पूछा कि हे हनीफा! अपने साहिब अर्थात मुसैलमा के बारे में क्या कहते हो। उन्होंने गवाही दी कि वे अल्लाह का रसूल है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुज्जाह से पूछा तुम क्या कहते हो। उसने उत्तर दिया ख़ुदा की कसम मैं तो बनू नुमेर के एक व्यक्ति की तलाश में निकला था जिसने हमारे क़बीला में क़तल किया था और मैं मुसैलमा के क़रीबियों में से नहीं हूँ। बहरहाल उस वक़्त वह ख़ौफ़ से या किसी वजह से अपनी बात से मुकर गया। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था और मैं ने इस्लाम क़बूल किया था और अभी भी इसी हालत पर हूँ। बाक़ी लोग भी लाए गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन सबको क़तल करवा दिया यहां तक कि जब सारिया बिन मुसैलमा बिन आमिर बाक़ी रह गया तो उसने कहा हे ख़ालिद अगर तुम यमामा वालों के बारे में कोई ख़ैर या बुराई चाहते हो तो मुज्जाह को ज़िंदा रखू क्योंकि यह जंग और अमन के दिनों में तुम्हारा मददगार होगा और मुज्जाह एक सरदार है। आप को सारिया की यह बात पसंद आई। आपने उसे भी ज़िंदा रखा। आपने उसे क़तल नहीं किया और इन दोनों के विषय में हुक्म दिया कि उन्हें लोहे की बेड़ियों से बांध दिया जाए। आप मुज्जाह को बुलाते थे और वे बेड़ियों में ही होता था और उस के साथ बात चीत करते। मुज्जाह यह समझता था कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु उस को क़तल कर देंगे। इसी दौरान जबकि वे दोनों बातें कर रहे थे कि मुज्जाह ने आपसे कहा कि हे इब्ने मुग़ीरह (ये ख़ालिद बिन वलीद का उपनाम था) मैं मुस्लमान हूँ। अल्लाह की क़सम मैं ने कुफ़्र नहीं किया। मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से मुस्लमान हो कर निकला था और अब मैं जंग के लिए नहीं निकला। फिर नुमेरी को तलाश करने की बात उसने दुहराई। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा क़तल और छोड़ देने के मध्य थोड़ा फ़ासिला है अर्थात क़ैद। यहां तक कि अल्लाह तआला हमारी जंग में फ़ैसला फ़र्मा दे जिसका वह फ़ैसला करने वाला है और आपने उसको अपनी बीवी के सपुर्द कर दिया जिससे आपने मालिक बन नूवेरा के क़तल के बाद शादी की थी। उसे हुक्म दिया कि क़ैद में इस का अच्छा ख़्याल रखे। मुज्जाह ने समझा कि ख़ालिद उस को क़ैद करना चाहते हैं ताकि वे उन्हें दुश्मन का पता बताए और उस की ख़बर दे। उसने कहा आप जानते हैं कि मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपकी इस्लाम पर बैअत की। बार-बार यही बात वह दोहराता था। फिर मैं अपनी क़ौम की तरफ़ वापिस लौटा और आज भी मेरी वही हालत है। लेकिन आगे जो वाक़ियात हैं उनसे पता लगता है यह सब ग़लत वर्णनी था। कहता है आज भी मेरी वही हालत है जो कल थी। (الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ والثلاثۃ الخلفاء, भाग 2 पृष्ठ 120-119 दारुल कुतुबु इल्मिया बेरूत 1420 हिज्री)

मुज्जाह के गिरोह से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु यमामा की तरफ़ चले।

उनके आने की ख़बर पा कर मुसैलमा अपने क़बीला बनू हनीफा के साथ मुक़ाबला के लिए निकला और अक़्रबा में आकर पड़ाव डाला। यह मुक़ाम भी यमामा की सरहद पर यमामा के खेतों और सरसब्ज़ इलाक़े के सामने वाक़्य था। ख़ालिद ने मुहकम मंसूबा बंदी का एहतिमाम किया। आप दुश्मन को कभी भी कमज़ोर नहीं समझते थे। मैदान-ए-मार्का में हमेशा पूरी पूरी तैयारी और मुकम्मल एहतियात के साथ रहते कि कहीं अचानक दुश्मन हमला न कर दे और कोई साज़िश न कर बैठे। आपकी यह सिफ़त वर्णन की गई है कि आप ख़ुद सोते नहीं थे, दूसरों को सुलाते थे। पूरी तैयारी के साथ रात गुज़ारते। आप पर दुश्मन की कोई बात गुप्त नहीं रहती थी। फ़ौज को मुरत्तिब करने का वक़्त क़रीब आ चुका था। इस मार्के में झंडा उठाने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन हफ़ बिन गनम थे। फिर यह हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा को सम्बन्ध में हो गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस मार्के में हज़रत शुरह बिन हुसना रज़ियल्लाहु अन्हु को आगे बढ़ाया और इस्लामी फ़ौज को पाँच हिस्सों में तक़सीम कर दिया। मुक़द्दमा पर हज़रत ख़ालिद मख़्ज़ूमी, मैमना पर हज़रत अबू हुज़ैफ़ा, मेसरा पर हज़रत शुजाअ और क़लब पर हज़रत ज़ैद बिन ख़िताब और शाहसवारों पर उसामा बिन ज़ैद को निर्धारित फ़रमाया और ऊंटों को पीछे रखा जिन पर ख़ेमे लदे हुए थे और महिलाएं सवार थीं और यह मार्का से क़बल आख़िरी तर्तीब और कारनामे डाक्टर अली अज़ सलाबी, पृष्ठ 358-357)

दूसरी तरफ़ मुसैलमा कज़्ज़ाब की फ़ौज भी तैयार खड़ी थी और मुसैलमा के बेटे शुरहबील ने अपने क़बीले से कहा हे बनू हनीफा ! आज का दिन ग़ैरत दिखाने का है। अगर आज तुमने शिकस्त खाई तो तुम्हारी औरतें लौंडियां बना ली जाएँगी और बग़ैर निकाह के उनसे फ़ायदा उठाया जाएगा। इसलिए आज तुम अपनी इज़्ज़त और आबरू की हिफ़ाज़त के लिए पूरी जवाँमर्दी दिखाओ और अपनी औरतों की हिफ़ाज़त करो। (तारीख़ अल् तिब्री لابی جعفر محمد بن الطبری، جلد دوم: ذکر بقیۃ خبر مسیلمۃ الکذاب وقومہ من اھل الیمامۃ, पृष्ठ 278 दारुल क़ुतुब इल्मिया, 2012 ई.)

बहरहाल इसके बाद घमसान की जंग हुई। वह जंग ऐसी सख़्त थी कि मुस्लमानों को इस से पहले ऐसी जंग का कभी सामना नहीं करना पड़ा। मुस्लमान पसपा हो गए। यहां भी पसपाई हुई और बनू हनीफा के लोगों मुज्जाह को छुड़ाने के लिए आगे बढ़े और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ेमा का इरादा किया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ेमा छोड़ चुके थे इसलिए वह मुज्जाह तक पहुंच गए जो हज़रत ख़ालिद की पत्नी की निगरानी में था। मुर्तदों ने आपकी बीवी को क़तल करना चाहा परन्तु मुज्जाह ने उनको रोक दिया और कहा कि मैं इस को पनाह देता हूँ। इसलिए उन्होंने उस को छोड़ दिया। मुज्जाह ने कहा कि तुम मर्दों पर हमला करो। एक तरफ़ तो यह दावा था कि मैं मुस्लमान हूँ और अब यह उन मुख़ालेफ़ीन को कह रहा है कि तुम मर्दों पर हमला करो और उन्होंने ख़ेमे को काट दिया।

(الکامل فی التاریخ لابن اثیر ذکر مسیلمہ واھل الیمامۃ, भाग 2, पृष्ठ 221 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

लश्कर-ए-इस्लाम के पीछे हटने के बावजूद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के अज़्म-ओ-सबात और जुर्रत-और-इस्तक़लाल में ज़रा भी लग़्ज़िश न आई और उन्हें एक लम्हे के लिए भी अपनी शिकस्त का ख़्याल पैदा न हुआ। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पुकार कर अपने लश्कर से कहा कि हे मुसलमानो अलैहदा अलैहदा हो जाओ अर्थात प्रत्येक क़बीला अलग अलग हो कर लड़े और इसी हालत मैं दुश्मन से लड़ूं ताकि हम देख सकें कि किस क़बीला ने लड़ाई में सबसे अच्छा बहादुरी का मुज़ाहरा किया है। इस ऐलान का अर्थ यह था कि समस्त मुस्लमान अपने अपने क़बीला के इलम तले लड़ें। इस से उन्होंने समस्त क़बायल में गोया एक नई रूह फूंक दी और इस में अपनी इन्फ़िरादियत और बहादुरी साबित

करने के लिए एक आगे बढ़ने की भावना पैदा कर दिया।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल (अनुवादक) पृष्ठ195-196)

मुस्लमानों ने भी एक दूसरे को तरग़ीब दिलाई। इसलिए उसकी मज़ीद तफ़सील इस तरह मिलती है कि हज़रत साबित बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे मुस्लमानों के गिरोह! कितनी बुरी है वह चीज़ जिसका तुमने ख़ुद को आदी बना दिया है, अगर आसानी का आदी बनाया है तो यह बहुत बुरी चीज़ है। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु एक दूसरे को जंग पर उभारने लगे और कहने लगे कि हे सूरत बकर वालो! आज जादू टूट गया। हज़रत साबित बिन कैस रज़ियल्लाहु अन्हु ने आधी पिंडुलियों तक ज़मीन खोद ली और अपने आपको इस में गाड़ लिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो आनसार का पर्चम उठाए हुए थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हनूत मल लिया था। अरब में यह दस्तूर था कि कुछ लोग जो अपने आपको बहुत बहादुर दिखाना चाहते थे वह ऐसा किया करते थे गोया यह ज़ाहिर कर रहे हैं कि वह काम जो मरने के बाद लोगों ने मेरे साथ करना था वह मैंने ख़ुद अपने साथ कर लिया है। आधा ज़मीन में गाड़ लिया गोया मैं मरने को तैयार हूँ और हनूत चंद ख़ुशबूदार चीज़ों का एक जोड़ था जो कि मुर्दे को ग़ुसल देने के बाद उस पर मलते हैं या वे दवाएं जिन्हें लाश पर लगाने से वे मुद्दतों तक गलने सड़ने से महफ़ूज़ रहती है। बहरहाल रिवायत है कि उन्होंने कफ़न बांध लिया और दुश्मन के मुक़ाबले में साबित-क़दम रहे यहां तक कि जाम-ए-शहादत नोश किया। (अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 320 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(फ़िरोज़ुल लुग़ात उर्दू, पृष्ठ 609 शब्द हनूत)

इसकी यह तफ़सील अभी मज़ीद है। इंशा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ। सबसे पहले तो एक शहीद का वर्णन है जिन्हें पिछले दिनों शहीद किया गया अब्दुस्सलाम साहिब इब्ने मास्टर मुनव्वर अहमद साहिब सदर जमाअत ईल प्लाट ओकाड़ा। उनको 17 मई को शहीद किया गया था। 35 वर्ष उनकी उमर थी। एक अहमदियत के दुशम ने ख़ंजर से वार कर के आपको शहीद किया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। तफ़सीलात के मुताबिक़ अब्दुस्सलाम साहिब अपने दो छोटे बच्चों श्रीमान क़मर इस्लाम जिसकी उमर छः वर्ष थी और श्रीमान बदर इस्लाम आयु साढ़े चार वर्ष के साथ किसी काम से घर से निकले बल्कि उनको बुलाया गया था कि अपने घरों का पानी इत्यादि का कनैक्शन ठीक करवा लू और लगता है यह भी कोई प्लैनिंग थी। प्लैनिंग से घर से बाहर बुलाया गया और पीछे से हमला कर के दुश्मन ने उन पर वार किए। बहरहाल जब यह घर से निकले तो हाफ़िज़ अली रज़ा उर्फ़ मुलाज़िम हुसैन नामी अहमदियत के दुश्मन ने उनका पीछा किया और ख़ंजर से हमला कर दिया। शाम का वक़्त था। हमला के नतीजा में अब्दुस्सलाम साहिब ज़ख़मों की ताब न लाते हुए अपने दो मासूम बच्चों के सामने मौक़ा पर शहीद हो गए। इन पर पहले पीछे से हमला किया। गर्दा उनका काट दिया, फिर अंतड़ियों पर हमला किया, फिर दिल पर वार किया। बहरहाल यह अवसर पर बच्चों के सामने ही शहीद हो गए और वह मुल्ज़िम जो था मौक़ा से भाग गया। यह जन्नत की तलाश में अहमदियों को शहीद करते हैं। क़ातिल मुक़ामी मुदर्रिसा जामिआ अमीनिया फ़रीदिया ईल प्लाट ज़िला ओकाड़ा का तालिब-ए-इलम था और वाक़िया से दो दिन क़बल ही मदर्रसा का हिफ़्ज़ का कोर्स मुकम्मल कर के फ़ारिग़ हुआ था। मुदर्रसा की तरफ़ से जो इख़ततामी तक़रीब हुई इस में मुदर्रसा के मुंतज़िम मौलवी ने अपनी तक़रीर में पास होने वाले तालिब-ए-इलमों को कहा था कि जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ तुम लोगों को कार्रवाई करनी चाहिए और ख़ूब जोश दिलाया और इंतेहाई इक़दामात की तहरीक भी की। बहरहाल तक़रीब तो हो रही है हिफ़्ज़ क्लास की लेकिन जिस ज़रीया से ये लोगों को जन्नत दिलवाना चाहते हैं यह ख़ुद भी जहन्नुम के रस्ते की तलाश कर रहे हैं और लोगों को भी जहन्नुम में डालने की कोशिश कर रहे हैं।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का प्रारम्भ शहीद मरहूम के पड़दादा हज़रत नबी-बख़्श साहिब के द्वारा से हुआ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे जो फमबियां ज़िला होशियारपुर के रहने वाले थे। शहीद के दादा श्रीमान मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब पैदाइशी अहमदी थे। फिर पाकिस्तान के क़ियाम के बाद ये लोग ओकाड़ा में आगए। शहीद मरहूम ने मैट्रिक तक, सैकण्डरी स्कूल तक पढ़ाई की फिर ज़मींदारी कर रहे थे। वक़्फ़-ए-नौ की बाबरकत तहरीक में भी शामिल थे। उनकी माता का भी वर्णन है कि उन्होंने जब उनको कहा कि तुम भी वक़्फ़-ए-नौ हो। तुम्हारे दो भाई तो मुरब्बी बन गए हैं तुम नहीं बने। तो उत्तर देते कि मैं उनकी ख़िदमत कर रहा हूँ। अल्लाह तआला मेरी इस ख़िदमत को भी कुछ क़बूल कर ही लेगा क्योंकि मैं बाक़ी ख़ानदान के लिए घर के लिए जो काम कर रहा हूँ। सारा घर उन्होंने ज़िम्मेदारी से और अपने काम से सँभाला हुआ था। माली लिहाज़ से सबको बेफ़िकर किया हुआ था। इस वक़्त बहैसियत क़ाद ख़ुद्दामुल अहमदिया ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से निज़ाम वसीयत में भी शामिल थे। निहायत मिलनसार मुहब्बत करने वाले थे। जिससे भी मिलते अपनाईयत का ताल्लुक़ क़ायम कर लेते थे। ग़ैर अहमदी जो उनके वाक़िफ़ कार थे वे भी यही कह रहे थे कि बहुत ज़ुलम हुआ है, लेकिन दहश्तगर्द मुल्ला के सामने बोलने की किसी को जुर्रत नहीं है। पाकिस्तान में शराफ़त बिल्कुल गूँगी हो चुकी है।

बहरहाल मरहूम के बारे में उनके भाईयों ने भी, रिश्तेदारों ने भी वर्णन किया है कि ख़िलाफ़त से बेपनाह इशक़ था। बला तमीज़ ज़रूरतमंद अहमदियों और ग़ैर अहमदियों की ख़ामोशी के साथ सहायता करते थे। मेहमान-नवाज़ी उनका नुमायां वस्फ़ था। खासतौर पर मर्कज़ी मेहमानों की ख़िदमत में पेश पेश रहते थे। उनके अज़ीज़ों ने सबने लिखा है कि बड़े निडर थे और अपने ख़ानदान में बहादुर नौजवान के तौर पर जाने जाते थे। माज़ी में भी मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ से शहीद मरहूम को ईदैन के अवसर पर तशद्दुद का निशाना बनाया गया था। बहरहाल उस वक़्त तो अल्लाह तआला उनकी हिफ़ाज़त करता रहा लेकिन अब यह मुक़द्दर था।

शहीद मरहूम के पीछे रहने वालों में वालिद श्रीमान मास्टर मुनव्वर अहमद साहिब सदर जमाअत ईल प्लाट ज़िला ओकाड़ा और पिता शमशाद कौसर साहिबा के इलावा उनकी पत्नी फ़र्ज़ाना इरम हैं और तीन छोटे बच्चे क़मर इस्लाम, छः वर्ष। बदर इस्लाम, साढ़े चार वर्ष और बेटी है अज़ीज़ा सहर, एक साल छः माह यादगार छोड़े हैं। शहीद मरहूम के चार भाई भी हैं जिनमें ज़हूर इलाही तौक़ीर साहिब रिसर्च सेल में मुरब्बी सिलसिला हैं। हाफ़िज़ अनवार अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। यह भी पाकिस्तान में हैं और इस के इलावा दो भाई हैं एक लंदन में हैं और एक रब्वाह में हैं। तीन बहने हैं। एक उनकी बहन यहां मानचैसटर यू.के में ज़ीशान ख़ालिद साहिब की पत्नी हैं। फिर एक कुवैत में हैं और तीसरी भी लंदन में हैं। अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम से नवाज़े। शहीद के मासूम बच्चों, पत्नी, मातापिता और जुमला पीछे रहने वालों का ख़ुद हामी-ओ-नासिर हो। मासूम बच्चों के सामने उनके बाप को शहीद किया गया था उनके दिल की क्या कैफ़ीयत होगी, क्या एहसासात होंगे अल्लाह ही जानता है। बड़ा बेटा जिसके सामने हुआ छः साल का था, कहते हैं कि फ़िलहाल तो वह बिल्कुल गुम-सुम है। अल्लाह तआला ही है जो उनको सब्र और सुकून अता फ़रमाए और अल्लाह तआला इन बच्चों की भी ख़ुद हिफ़ाज़त फ़रमाए और दुश्मन को उनके अंजाम तक पहुंचाए।

दूसरा जो वर्णन है वो श्रीमान ज़ुल्फ़क़ार अहमद इब्ने शेख़ सईद उल्लाह साहिब फैसलाबाद का है जो पिछले दिनों अज़र बाईजान गए हुए वहां 36 वर्ष की उमर में दिल की धड़कन बंद हो जाने की वजह से होटल में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

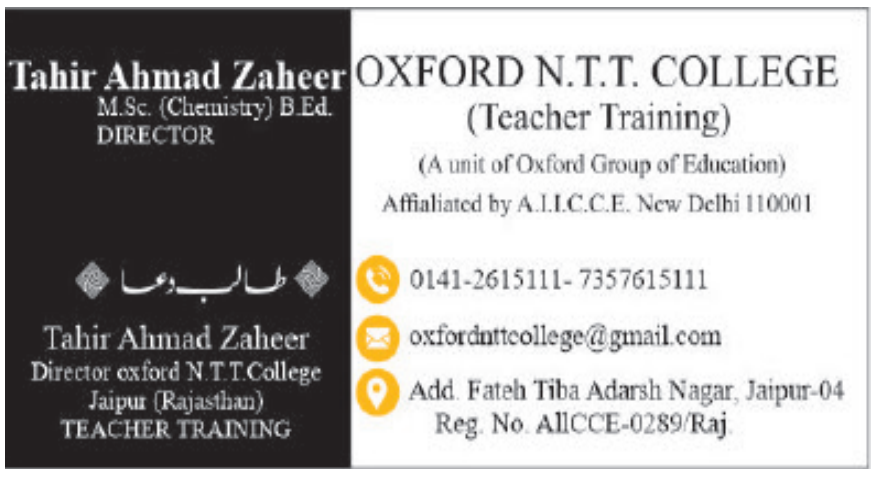

लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा हज़रत शैख़ रहमतुल्लाह साहिब के ज़रीया से हुआ था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और हज़रत शेख़ झंडा साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे। हज़रत शैख़ रहमत उल्लाह साहिब की मस्जिद मुबारक क़ादियान के साथ पंसारी की दुकान थी और बैअत के बाद क़ादियान से क़रीबी यह अपने गांव तुगलवाल से हिज्रत कर के क़ादियान आ गए थे।

एक दफ़ा किसी ने हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा अव्वल को शिकायत के रंग में कहा कि मस्जिद के क़रीब दुकान नहीं होनी चाहिए। हज़रत मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वर्णन किया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ये लोग अस्हाब-ए-सुफ़्फ़ा हैं। (असहाबे अहमद, भाग 10 पृष्ठ 187 - 189)

और उन असहाब-ए-सुफ़्फ़ा को फिर अल्लाह तआला ने प्रत्येक लिहाज़ से वे कुशाइश अता फ़रमाई और उनके ख़ानदानों को भी बढ़ाया। मरहूम ने 2005 ई. में मानचैसटर यूनीवर्सिटी से टेक्सटाइल की फ़ील्ड में बी एस सी ऑनर्ज़ की डिग्री हासिल की थी। इस के बाद ख़ानदानी कारोबार सँभालने में व्यस्त हो गए। दुनियावी तरक़्क़ी की इंतिहा के बावजूद आजिज़ी और इनकेसारी की मिसाल थी। मिलना मिलाना प्रत्येक किस्म के तबके के लोगों से था। प्रत्येक के साथ निहायत इज़्ज़त और एहतेराम का सुलूक करते थे और अपने दोस्त और भाई की तरह प्रत्येक से उनका सुलूक था। मुलाज़मीन का भी बहुत ख़्याल रखते थे। उनसे बड़ी हमदर्दी करते थे। सदक़ा-ओ-ख़ैरात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे और फिर यह हस्पताल इत्यादि के ख़ैराती कामों में भी हिस्सा लेते थे। जमाअती चंदों में प्रत्येक विभाग में हिस्सा लेते बल्कि सैक्रेटरी माल को ख़ुद याददहानी करवाते कि मेरे से चंदे लें और प्रत्येक मद जो है इस के बारे में बताएं और इस का चंदा लें। ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के प्राजेक्टस में उन्होंने कसरत से हिस्सा लिया। लोगों को घर बनवा कर दिए। ग़रीबों की शादियां करवाईं। किसी से मिलते तो अच्छी चीज़ें सीखने की कोशिश करते। अपनी ज़िंदगी में उन्हें अमल में लाने की कोशिश करते। रमज़ान में खासतौर पर बहुत ख़िदमत-ए-ख़लक़ करते। मरहूम और उनके माता पिता ने बेलीज़ में एक मस्जिद भी बनवाई है। यह बहुत बड़ा प्राजैक्ट था और वहां अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बहुत बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद बनी है। उनके बारे में लिखा है कि नमाज़ों के लिए भी काम रोक कर वक़्त निकालते। क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते और अपनी ज़िंदगी को बाक़ायदा उन्होंने रेगोलेट किया हुआ था। जब मस्जिदों की पाबंदियां हो गईं तो घर में बाजमाअत नमाज़ का एहतिमाम था। मलेशीया में थोड़ी देर के लिए सैर के लिए गए थे। वहां जमाअत की मस्जिद पर पुलिस ने जब जमाअत के लोगों को पकड़ा तो उनको भी थोड़ी देर के लिए अल्लाह के लिए जेल की कठिनाई सहन करने की सआदत मिली। मरहूम के पीछे रहने वालों में पत्नी और दो बच्चों के इलावा माता पिता, पाँच भाई और एक बहन शामिल हैं। उनकी माता आसिफ़ा सईद साहिबा सदर लजना ज़िला फैसलाबाद हैं। अल्लाह तआला इन सबको सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

डाक्टर हामिद महमूद साहिब उनके बारे में लिखते हैं कि अहमदियत और ख़ासकर ख़िलाफ़त से लगाओ और प्यार का ताल्लुक़ था। अपने समाजी सयासी और इंतिज़ामी ताल्लुक़ात से लोगों की सहायता की कोशिश करते और जिनको भी सहायता की ज़रूरत होती बढ़ चढ़ कर उनकी ख़िदमत करना अपना फ़र्ज़ समझते थे। किसी को तकलीफ़ में देखकर ख़ामोशी से उस की सहायता करना भी फ़र्ज़ समझते थे। इंतिहाई ख़ामोशी से और बग़ैर ख़ुद-नुमाई के यह काम करने की कोशिश करते।

डाक्टर मसऊदुल-हसन नूरी साहिब कहते हैं कि ज़ुल्फ़क़ार बहुत नेक, बावक़ार और मुख़लिस नौजवान अहमदी थे। कहते हैं मेरा जब से उनसे परिचय हुआ उनकी सलाहियतों को मैं बख़ूबी जान गया। ह्यूमैनिटी फ़रस्ट की तहरीकात में बढ़ चढ़ कर माली क़ुर्बानी करने वाले थे। क़ुर्बानी का जज़बा और सख़ावत का मयार बहुत बढ़ा हुआ था। कई कई लाख रुपय दे दिया करते थे। इस के साथ ही फिर अपने विनम्रता का इज़हार भी किया करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके माता पिता को भी सब्र और हौसला दे। बीवी को सब्र और हौसला दे। बच्चों की ख़ुद हिफ़ाज़त फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तीसरा वर्णन श्रीमान मलिक तबस्सुम मक़सूद साहिब कैनेडा का है जिनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पिता मलिक मक़सूद अहमद साहिब 28 मई 2010 ई. को दारुल ज़िकर लाहौर में होने वाले हमला में शहीद हो गए थे। वालिद मलिक मक़सूद अहमद शहीद के नाना हज़रत मलिक अली बख़श साहिब भोपाल वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे जिन्हों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लैक्चर स्यालकोट को सुन कर बैअत करने का इरादा किया था। मलिक तबस्सुम मक़सूद साहिब ने 1991 ई. में अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ की। 2006 ई. में उनकी डयूटी नज़ारत उमूर-ए-आमा में लगी। वहां आपने नायब नाज़िर उमूर-ए-आमा के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। फिर 2011 ई. में बतौर मुशीर क़ानूनी तहरीक जदीद उनको निर्धारित किया गया। फिर यह 2016 ई. में मेरी इजाज़त से शुहदा की फ़ैमिलियों के साथ कैनेडा चले गए। पहले तो नहीं जाना चाहते थे लेकिन मेरे कहने पर चले गए। कैनेडा में भी उन्होंने उमूर-ए-आम्मा और जायदाद के विभागों में ख़िदमत करने के इलावा नाज़िम दारुल क़ज़ा के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम सौम-ओ-सलात के पाबंद, तहज्जुद का बाक़ायदगी से इल्तिज़ाम करने वाले, क़ुरआन-ए-करीम से गहिरा लगाओ रखने वाले, ख़िलाफ़त से गहिरी वाबस्तगी और ख़लीफ़ा वक़्त की आवाज़ पर लब्बैक कहने वाले थे। बड़े नेक और हमदरद इन्सान थे। उनके पीछे रहने वालों में माता और पत्नी के इलावा एक बेटा और तीन बेटियां शामिल हैं। उनके इकलौते बेटे डाक्टर अतहर अहमद वक़्फ़-ए-ज़िंदगी हैं और उनके दामाद उमर फ़ारूक़ साहिब भी मुरब्बी सिलसिला हैं। मरहूम मलिक ताहिर अहमद साहिब अमीर जमाअत ज़िला लाहौर के भांजे थे।

उनकी बेटी रज़ीया तबस्सुम लिखती हैं कि उनको तब्लीग़ का बड़ा शौक़ था। एक दफ़ा रात को यह तब्लीग़ करने के लिए निकले तो वहां उन पर लड़कों ने हमला कर दिया। बहरहाल उनसे बच-बचा के यह निकले लेकिन इस लड़ाई में एक मुक्का उन की आँख पर लगा और आँख ज़ख़मी हो गई। बड़ी मुश्किलों से घर पहुंचे लेकिन किसी को बताया नहीं। कई सालों के बाद जब आँख में दुबारा तकलीफ़ हुई और डाक्टर को दिखाया तो उसने कहा यह पुरानी किसी चोट का असर है। तब उन्होंने बताया कि इस तरह यह वाक़िया हुआ था और बहरहाल इस बात पर ख़ुश थे कि मेरी बीनाई की कमज़ोरी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचाने की वजह से हुई है।

मलिक ताहिर अहमद साहिब लिखते हैं कि तबस्सुम मक़सूद बचपन से ही नेकी का रुजहान रखते थे। ज़ेली तन्ज़ीमों और फिर जमाअती निज़ाम के तहत ख़िदमत बजा लाते रहे। ख़िलाफ़त से गहिरी वाबस्तगी और निज़ाम जमाअत की इताअत उनकी विशेषता रही। बे-इंतिहा विनम्र स्वभाव और अल्लाह पर तवक्कुल करने वाले थे। बच्चों की निहायत आला दर्जा तर्बीयत की और उनके ख़िलाफ़त और निज़ाम जमाअत से पुख़्ता ताल्लुक़ क़ायम करने के लिए बहुत कोशिश की।

हाफ़िज़ मुहम्मद अकरम क़ुरैशी साहिब जो नायब वकीलुल माल सानी हैं, कहते हैं कि मेरा उनसे पुराना ताल्लुक़ है। हम-साएगी का भी ताल्लुक़ रहा। बड़े मुख़लिस, वफ़ा-शिआर, हमदर्द, ख़िदमत-ए-ख़लक़ के जज़बा से हर-दम मामूर ख़िलाफ़त के शैदाई थे। ख़ुदा तआला की ज़ात पर उन्हें कामिल यक़ीन था। एक-बार मैंने देखा किसी व्यक्ति को इरफान-ए-इलाही के विषय में समझा रहे थे तो मैं ने देखा कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत और इस की अज़मत की वजह से उनकी आँखों से आँसू रवां थे। फिर यह लिखते हैं कि उनके साथ काम करने वाले एक कारकुन ने मुझे बताया कि मुझे कहा करते थे कि मेरी नसीहत है कि कोई क्या करता है यह मत देखो, किसी की मत सुनो, बस अपने ईमान को बचाओ। ख़िलाफ़त का दामन मत छोड़ना इस के इलावा कहीं अमन नहीं। ख़ुद्दामुल अहमदिया के ज़माने में ही जमाअत के साथ निहायत गहरा ताल्लुक़ और अपनी जान, माल, वक़्त और इज़्ज़त के साथ हर-दम पेश पेश थे। फुर्तीले जवान थे। चाक़-ओ-चौबंद थे। जिस्म मज़बूत था। लंबा क़द था। स्पोर्टस मैन थे और इस तरह जो सारी सलाहियतें थीं जमाअत की ख़िदमात के लिए खर्च करते थे। छोटी उमर में ही सुप्रीमकोर्ट की प्रैक्टिस का लाईसैंस भी उनको मिल गया। मुख़्तलिफ़ नौईयत के कामों की अंजाम देही का ग़ैरमामूली तजुर्बा और सलाहियत थी और दुनिया के सफ़र भी किए हुए थे। यह नहीं कि केवल अपने हालात में ही रहते थे लेकिन हमेशा आजिज़ी थी। कभी उनमें ख़ुदपसंदी नहीं पैदा हुई। कोई घमंड नहीं था।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए ।

★ ★ ★

पृष्ठ 03 का शेष

का यह अर्थ कदापि नहीं होगा कि इन किताबों में रुपया भरा हुआ है बल्कि यह अर्थ है कि जिस चीज़ को तुम ख़ज़ाना कहते हो उस से अधिक फ़ायदे वाली चीज़ मेरे पास मौजूद है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु तफ़सीर-ए-कबीर में इसी किस्म के एक आरोप का उत्तर देते हुए तहरीर फ़रमाते हैं :

"प्रथम तो यह बात याद रखने के काबिल है कि क़ुरआन-ए-करीम ने साफ़ तौर पर वर्णन कर दिया है कि अगले जहान के इनामात का समझना इन्सानी अक़ल से बाला है अतः इस दुनिया की ज़िंदगी से आखिरत की ज़िंदगी का क़ियास करना दरुस्त नहीं। क़ुरआन-ए-करीम फ़रमाता है :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۔

(अल् सज्दः : 18) अर्थात् कोई इन्सान भी उस को नहीं समझ सकता कि उन के लिए अगले जहान में क्या-क्या नेअमतें गुप्त रखी गई हैं। इस से मालूम होता है कि जन्नत के बारे में जो कुछ क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन हुआ है वह तमसीली भाषा में है और इस से वह मफ़हूम निकालना दरुस्त नहीं जो इस दुनिया में इसी किस्म के शब्द से निकाला जाता है ... जब क़ुरआन-ए-करीम ने यह कहा कि मोमिनों को वे जन्नतें मिलेंगी जिनमें साया-दार दरख़्त और नहरें और न ख़राब होने वाला दूध और न सड़ने वाला पानी और मोम और आलाईश से पाक शहद और नशा न देने वाली बल्कि दिल को पाक करने वाली शराब होगी तो इस से उनके आरोप का उत्तर इस रंग में दिया कि जिन चीज़ों को तुम नेअमत समझते हो वह वास्तविक मोमिनों को मिलने वाले इनामात से तुच्छ हैं। जिन नहरों को तुम नेअमत समझते हो उनका पानी तो सड़ जाता है मोमिनों को वे नहरें मिलेंगी जिनका पानी सड़ने वाला नहीं होगा। और जिन बाग़ों को तुम नेअमत ख़्याल करते हो वो असल नेअमत नहीं असल नेअमत तो वे बाग़ हैं जो कभी बर्बाद नहीं होंगे और वे मोमिनों को मिलेंगे। जिस शराब को तुम नेअमत समझते हो उसकी मोमिनों को आवश्यकता नहीं वे शराब तो गंदी और अक़ल पर पर्दा डालने वाली चीज़ है। मोमिनों को तो ख़ुदा वे शराब देगा जो अक़ल को तेज़ करने वाली और पाकीज़गी बढ़ाने वाली होगी। और जिस शहद पर तुमको घमंड है इस में तो आलाईश होती है ख़ुदा तआला मोमिनों को वह शहद देगा जो प्रत्येक आलाईश से पाक होगा। और जिन साथियों पर तुम को नाज़ है वह नेअमत नहीं क्योंकि वे गंदे हैं। मोमिनों को अल्लाह तआला वे साथी देगा जो पाक होंगे। जिन फलों पर तुमको नाज़ है वह तो ख़त्म हो जाते हैं मोमिनों को तो वे फल मिलेंगे जो कभी ख़त्म नहीं होंगे और हर वक़त और इच्छा के अनुसार मिलेंगे। यह मज़मून ऐसा स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति जो द्वेष से ख़ाली हो कर ग़ौर करे इसके मफ़हूम को समझ सकता है और उसके लतीफ़ इशारा को पा सकता है परन्तु जो घमंडी हो या जाहिल। उस का ईलाज तो कोई है ही नहीं ... ख़ुलासा यह कि क़ुरआन-ए-करीम में जिन बाग़ों और नहरों और फलों और जिस दूध और शहद और शराब का वर्णन आता है वह इस दुनिया के बाग़ों और नहरों और फलों से बिल्कुल विभिन्न हैं और वहां का दूध और शहद और शराब इस दुनिया के दूध और शहद और शराब से बिल्कुल विभिन्न है और क़ुरआन-ए-करीम ने इन उमूर की ख़ुद ऐसी व्याख्या फ़र्मा दी है कि इसके बाद इस अमर में संदेह करना केवल तास्सुब का इज़हार है और ये मुहावरात चूँकि पहली पुस्तकें में भी मौजूद हैं इस लिए इन आयतें में कोई ऐसी बात नहीं जिसका समझना लोगों के लिए हो।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग प्रथम, पृष्ठ 241 से 246)

फिर आखिरत की ज़िंदगी की इन नेअमतों को दुनियावी नाम भी लोगों को समझाने और उनकी तरफ़ उन्हें राग़िब करने के लिए दिए गए हैं। क्योंकि धर्म प्रत्येक किस्म के लोगों के लिए होता है। इसलिए ऐसी चीज़ों को जिनका समझना लोगों के लिए मुश्किल हो आवश्यक होता है कि उन्हें ऐसे शब्द में वर्णन किया जाए कि उन्हें प्रत्येक सतह के लोग समझ जाएं और प्रत्येक दर्जे के लोग उनसे फ़ायदा उठा सकें। इस हिक्मत को समक्ष रख कर क़ुरआन-ए-करीम ने आखिरत की ज़िंदगी की नेअमतों के लिए ऐसे शब्द इस्तिमाल किए हैं जो प्रत्येक किस्म के लोगों के लिए उनकी अक़ल और दर्जे के अनुसार तश्फ़ी का मूजिब हों। फिर कुफ़्फ़ार चूँकि मुसलमानों को ताना दिया करते थे कि ये लोग ख़ुद भी प्रत्येक किस्म की नेअमतों से वंचित हैं और हमसे भी ये सब नेअमतें छुड़वाना चाहते हैं। इस लिए अल्लाह तआला ने आखिरत की ज़िंदगी की नेअमतों को उनके ज़हन के क़रीब करने के लिए इन दुनयावी इश्याय का नाम दे दिया जिनको वे नेअमत समझते थे और इन्ही चीज़ों के नाम लेकर बताया कि मोमिनों को यह सब कुछ हासिल होगा। अन्यथा क़ुरआन और हदीस में यह मज़मून ख़ूब खोल कर वर्णन कर दिया गया है कि जन्नत में ऐसी नेअमतों होंगी जिन्हें पहले न किसी आँख ने देखा होगा, न किसी कान ने उनके बारे में सुना होगा और न किसी के दिल में उनके सम्बन्ध में कभी कोई ख़्याल गुज़रा होगा। हाँ सिर्फ़ वे नेक और पार्सा लोग जो इस दुनिया में रहते हुए इन दुनयावी आलाईशों से किनारा-कशी इख़्तियार करके अध्यात्मिक परवाज़ें करने वाले होंगे या नहीं इसी दुनिया में इन नेअमतों का मज़ा चखा दिया जाएगा और ऐसे लोग जब जन्नत में इन नेअमतों को अपनी पूरी कैफ़ीयत के साथ पाएँगे तो बरमला पुकार उठेंगे कि هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ (अल् बकरः : 26)अर्थात् यह तो वही रिज़्क़ है जो हमें इस से पहले भी दिया गया था। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आखिरत की ज़िंदगी की इस हक़ीक़त को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं

"ख़ुदा तआला फ़रमाता है : فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ (अल् सज्दः : 18)अर्थात् कोई नफ़्स नेकी करने वाला नहीं जानता कि वह क्या-क्या नेअमतें हैं जो उसके लिए मख़फ़ी हैं। अतः ख़ुदा ने इन समस्त नेअमतों को मख़फ़ी क़रार दिया जिनका दुनिया की नेअमतों में उदाहरण नहीं। यह तो ज़ाहिर है कि दुनिया की नेअमतें हम पर मख़फ़ी नहीं हैं और दूध और अनार और अंगूर इत्यादि को हम जानते हैं और हमेशा ये चीज़ें खाते हैं तो इस से मालूम हुआ कि वे चीज़ें और हैं और उनको इन चीज़ों से केवल नाम का इश्तेराक है। अतः जिसने बहिश्त को दुनिया की चीज़ों का मजमूआ समझा। उसने क़ुरआन शरीफ़ का एक शब्द भी नहीं समझा।

इस आयत की व्याख्या में जो अभी मैंने वर्णन की है हमारे सय्यद मौला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि बहिश्त और इसकी नेअमतें वे चीज़ें हैं जो न कभी किसी आँख ने देखें और न किसी कान ने सुनीं और न दिलों में कभी गुज़रीं। हालाँकि हम दुनिया की नेअमतों को आँखों से भी देखते हैं और कानों से भी सुनते हैं और दिल में भी वे नेअमतें गुज़रती हैं। अतः जबकि ख़ुदा तआला और रसूलुल्लाह उसका उन चीज़ों को एक निराली चीज़ें बतलाता है तो हम क़ुरआन से दूर जा पड़ते हैं यदि यह गुमान करें कि बहिश्त में भी दुनिया का ही दूध होगा जो गाएयों और भैंसों से दोहा जाता है। मानों दूध देने वाले जानवरों के वहां रेवड़ के रेवड़ मौजूद होंगे। और दरख़्तों पर शहद की मक्खियों ने बहुत से छत्ते लगाए हुए होंगे और फ़रिश्ते तलाश करके वह शहद निकालेंगे और नहरों में डालेंगे क्या ऐसे ख़्यालात इस शिक्षा से कुछ मुनासबत रखते हैं जिस में ये आयतें मौजूद हैं कि दुनिया ने इन चीज़ों को कभी नहीं देखा और वे चीज़ें रूह को रोशन करती हैं और ख़ुदा की मार्फ़त बढ़ाती हैं और अध्यात्मिक ग़िज़ाएँ हैं। जबकि इन ग़िज़ाओं का समस्त नक़्शा जस्मानी रंग पर ज़ाहिर किया गया है परन्तु साथ साथ बताया गया है कि उनका स्रोत रूह और रास्ती है।" (इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ाएन, भाग 10 पृष्ठ 397 -398)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम मज़ीद फ़रमाते हैं : "इस्लामी बहिश्त की यही हक़ीक़त है कि वह इस दुनिया के ईमान और अमल का एक साया है वह कोई नई चीज़ नहीं जो बाहर से आकर इन्सान को मिलेगी बल्कि इन्सान की बहिश्त इन्सान के अंदर ही से निकलती है और प्रत्येक की बहिश्त उसी का ईमान और उसी के नेक आमाल से हैं जिनकी ईसी दुनिया में लज़्ज़त शुरू हो जाती हैऔर पोशीदा तौर पर ईमान और आमाल के बाग़ नज़र आते हैं। और नहरें भी दिखाई देती हैं। लेकिन आलिम आख़िरत में यही बाग़ खुले तौर पर महसूस होंगे। ख़ुदा तआला की पाक शिक्षा हमें यही बतलाती है कि सच्चा और पाक और मुस्तहकम और कामिल ईमान जो ख़ुदा और उसकी विशेषता और उसके इरादों के सम्बन्ध में हो वह बहिश्त ख़ुशनुमा और बारावर दरख़्त है और नेक आमाल इस बहिश्त की नहरें हैं।" (इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रूहानी खज़ाएन, भाग 10, पृष्ठ 390)

बाक़ी जहां तक आपके प्रश्न के इस हिस्सा का सम्बन्ध है कि उखरवी ज़िंदगी में केवल मर्दों से इनामात का वादा किया गया है महिलाओं से ऐसा कोई वादा नहीं। यह प्रश्न भी इस्लामी शिक्षा से अज्ञानता के परिणाम में पैदा होता है क्योंकि क़ुरआन और हदीस में जगह जगह जहां नेक और नेक मर्दों को इन आखिरत के इनामात का वारिस क़रार दिया गया है वहां नेक और पवित्र महिलाओं को भी इन इनामात का हक़दार क़रार दिया गया है। फ़रमाया :

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا

(अल् निसा : 125) अर्थात् और जो लोग ख़ाह मर्द हूँ या महिलाएं मोमिन होने की हालत में नेक काम करेंगे तो वे जन्नत में दाख़िल होंगे। और उन पर खजूर की गुठली के सुराख़ के बराबर (भी) ज़ुलम नहीं किया जाएगा।

इसी तरह फ़रमाया : مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 23 June 2022 Issue No.25

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ذَكَرٍ اَوۡ اُنۡثٰى وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ يُرۡزَقُوۡنَ فِيۡهَا بِغَيۡرِ حِسَابٍ (अल्-मोमिन : 41) अर्थात् जो बुरे अमल करेगा। उस को उसी के अनुसार परिणाम मिलेगा और जो कोई ईमान के अनुसार अमल करेगा ख़ाह मर्द हो या महिलाएं, इस शर्त के साथ कि वे ईमान में सच्चा हो वे और उसके हम मशरब लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनको इस में बग़ैर हिसाब के इनाम दिया जाएगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इसी बात की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं: "पहली क़ौमों ने मर्दों के सम्बन्ध में बे-शक क़वानीन तजवीज़ किए थे परन्तु महिलाओं के हुक़ूक़ का उन्होंने कहीं वर्णन नहीं किया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वह पहले इन्सान हैं जिन्होंने यह शिक्षा दी कि जैसे मर्दों के हुक़ूक़ महिलाओं के ज़िम्मा हैं इसी तरह महिलाओं के हुक़ूक़ मर्दों के ज़िम्मा हैं।

وَلَهُنَّ مِثۡلُ الَّذِىۡ عَلَيۡهِنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ

जिस तरह महिलाओं पर मर्दों के हुक़ूक़ हैं, इसी तरह महिलाओं के भी बहुत से हुक़ूक़ हैं जो मर्दों को अदा करने चाहिऐं। फिर प्रत्येक ज़िंदगी के हिस्से में महिलाओं की तरक़्क़ी के रास्ते आपने खोले। उसे जायदाद का मालिक क़रार दिया। उसकी भावनाएं और एहसासात का ख़्याल रखा। उसकी शिक्षा की निगहदाशत की। इसकी तर्बीयत का आदेश दिया और फिर निर्णय कर दिया कि जिस तरह जन्नत में मर्द के लिए प्रगति के ग़ैर मुतनाही मुरातिब हैं इसी तरह जन्नत में महिलाओं के लिए भी ग़ैर मुतनाही प्रगति के दरवाज़े खुले हैं।" (ख़ुतबा-ए-जुमा इरशाद फ़र्मूदा : 26 नवंबर 1937 ई. प्रकाशन अल्-फ़ज़ल 4 दिसंबर 1937 ई. पृष्ठ 5)

एक और अवसर पर हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "क़ुरआन-ए-करीम को शुरू से अंत तक पढ़ कर देख लो समस्त मसायल, आदेश और इनामात में महिलाएं और मर्द दोनों का वर्णन है। उदाहरणतः यदि यह कहा जाता है कि नेक मर्द तो साथ ही कहा जाता है नेक महिलाएं। यदि किसी जगह वर्णन है कि इबादत करने वाले मर्द तो साथ ही यह वर्णन होगा कि इबादत करने वाली महिलाएं। फिर यदि यह वर्णन है कि जन्नत में मर्द जाऐंगे तो साथ ही यह वर्णन होगा कि जन्नत में महिलाएं भी जाएँगी। मर्द की यदि आला दर्जा की नेकियां हैं और वह जन्नत में एक उच्च स्थान पर रखा जाता है तो इसकी पत्नी जिसकी नेकियां इस स्थान के मुनासिब-ए-हाल नहीं अपने पति की वजह से उसी स्थान में रखी जाएँगी। इसी तरह यदि महिलाएं आला नेकियों की मालिक है और उनकी वजह से वह जन्नत में उच्च स्थान पर रखी जाती है तो इस से अदना नेकियां रखने वाला पति भी इसकी वजह से उसी स्थान पर रखा जाएगा।" (ख़ुत्बा जुमा इरशाद फ़र्मूदा 31 जुलाई 1950 ई. प्रकाशन अल्-फ़ज़ल रब्वाह 14 नवंबर 1962 ई. पृष्ठ 4)

इस्लाम की रु से महिलाएं की ज़िम्मेदारियाँ और उनके इस दुनिया में हुक़ूक़ और आखिरत की ज़िंदगी में मिलने वाले इनामात के विषय पर मैंने भी विभिन्न जलसों में महिलाएं से ख़ताबात किए हैं। जलसा सालाना जर्मनी 2019 ई. में भी मैंने महिलाओं से इसी विषय पर ख़त्ताब किया था, उसे भी देख लें।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 11 जून 2021 ई.)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

किसी और हस्ती ने दिया है और बाहर से आया है उसने ख़ुद वह निज़ाम तैयार नहीं किया।

इस आयत में इस तरफ़ भी तवज्जा दिलाई गई है कि नहल अर्थात शहद की मक्खियां भी मुख़्तलिफ़ किस्म की हैं।कुछ पहाड़ों में छत्ते बनाती हैं, कुछ मैदान के दरख़्तों पर और कुछ घरों या उन अर्शों पर जो अंगूर वग़ैरा के लिए तैयार किए जाते हैं। इस से इस तरफ़ इशारा किया है कि इन्सानों मैं से वह्यी का कारण भी एक से नहीं होते। कुछ का मुक़ाम पहाड़ होता है कुछ का दरख़्त पर और कुछ का छतों और अर्शों पर। अर्थात कुछ बहुत ऊंचे मुक़ाम के होते हैं कुछ उनसे अदना और कुछ उनसे अदना। इस में गोया इसी मज़मून की तरफ़ इशारा किया है जो आयत تِلۡكَ الرُّسُلُ فَضَّلۡنَا بَعۡضَهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ (बक़रः : 33) में बयान किया गया है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 194 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
﴿ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار﴾ (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad